मेरा राजस्थान

वर्ष-२०, अंक- ११, मुम्बई, जनवरी २०२६ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं 2026

सभी भारतवासियों का नव वर्ष मंगलमय हो

SC

Sharda Cropchem Ltd.

Prime Business Park, Dashrathlal Joshi Road,
Vile Parle West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400056
Ph. Off.: +91 22 66782800
E-mail: office@shardaintl.com
(ASSOCIATE CONCERN SHARDA INTERNATIONAL FZCO DUBAI, U.A.E.)

ISO 9001: 2008 Reg. No: 690257
CIN: U51909MH2004PLC145007

MOIRA
THERMEX TMT BARS
The Backbone of Your Structure
MOIRA means
Double strength for your Construction
MOIRA TMX 550D
Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS
JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.
106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moirantmt.com

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत! **जय भारत!** **जय भारत!**

२७ दिसंबर २०२५

आदरणीय प्रधानमंत्री,
श्री नरेंद्र मोदी
रायसीना हिल्स,
नई दिल्ली,

विषयः 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए, इंडिया नहीं, 'एक राष्ट्र-एक नाम, केवल भारत' अभियान को आपके समर्थन हेतु निवेदन!

जय भारत!

आपका 'वीर बाल दिवस' पर दिया गया राष्ट्रीय मनतव्य सुनकर मन गदगद हो उठा, मेरा ही नहीं समस्त भारतवासियों का सर फ़क्र से ऊंचा हो गया, सचमुच आप जैसा पंतप्रधान 'भारत' को आज तक नहीं प्राप्त हो पाया है, भविष्य की बात नहीं की जा सकती।

आपने कहा कि अंग्रेज राजनेता मैकाले द्वारा १८३५ को रची गई गुलामी की साजिश ने भारत को कमजोर ही नहीं किया,बल्कि उसकी साजिश ने दूर-दूर तक भारतीयता खत्म करने का प्रयास भी किया। आपने कहा कि आगामी १० सालों के लिए विशेष पश्चात गुलामी की साजिश को हम १०० वर्ष पूरा करेंगे और इन बचे १० सालों में हमें हर गुलामी की सोच को मिटा डालना है।

आपसे निवेदन है कि सर्वप्रथम हमें संविधान से 'इंडिया' नाम को हटाना चाहिए, क्योंकि 'इंडिया' नाम गुलामी का प्रतीक है। हम भारतीयों की दिली इच्छा है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ में लिखा गया 'इंडिया' नाम को हटाने का प्रयास आप जैसे दूरदर्शी, भारत मां के लाडले, भारतीयता के धनी यदि करेंगे तो विश्वास दिलाता हूं कि भारतीय संस्कृति के इतिहास में आपका नाम मिल के पत्थर की तरह स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो जाएगा।

हमें विश्वास है कि गुलामी की याद दिलाता हमारे राष्ट्र का 'इंडिया' नाम आपके द्वारा ही संविधान से संवैधानिक रूप से विलुप्त करवाया जाएगा और यह वर्ष २०२६ में जरूर होगा। जय भारत!

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक
अनुप जलोटा, मुंबई
मो. 9821069089

राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक
दिलिप सेन, मुंबई
मो. 93228 66476

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
वर्षा मूंधड़ा, कोलकाता
मो. 9874272916

पूर्वांचल उपसभापति
सुशीला पुगलिया, कोलकाता
मो. 8617203712

उपाध्यक्ष
कांता गगरानी, आगरा
मो. 9837888088

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
रवि जैन, मुंबई
मो. 8108843571

उत्तरांचल उप सभापति
पूरण डावर, आगरा
मो. 9837065440

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 044 (770) 3827595

प्रकल्प प्रमुख

राष्ट्र सेविका
किरण लड्ढा, दिल्ली
मो. 9871605944

प्रसिद्ध उद्योगपति
प्रकाश बियानी, दिल्ली
मो. 7895815961

पूर्व अध्यक्ष NICS, Bharat
ममता बिन्नानी, कोलकाता
मो. 9831099551

मिसेस भारत युनिवर्स
रूपल मोहता, खामगांव
मो. 8989919898

मिसेस भारत युनिवर्स
सिद्धि जोहरी, जोधपुर
मो. 7023043164

प्रसिद्ध उद्योगपति व ब्लॉगर
श्रद्धा गट्टानी, उदयपुर
मो. 9314664412

प्रसिद्ध उद्योगपति
संगीता बियानी, भुसावल
मो. 9822536111

सुरेश मुंदडा, संबलपुर
मो. 9437061417

नंदकिशोर माहेश्वरी, ढेंकनाल
मो. 9437074044

घनश्याम पेड़ीवाल, भुवनेश्वर
मो. 9437086896

सुशील राठी, बालासोर
मो. 9437559297

सुनील कोठारी, कटक
मो. 9338104702

दिनेश करनानी, बालासोर
मो. 9937212483

और विश्व में फैले भारतीय...

आव्हानः 'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

राष्ट्रीय कार्यालयः बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-4015 8094, ईमेल : mainbharathunfoundation@gmail.com, वेबसाइट : www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆
१५/१, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट, १ तल्ला, माहेश्वरी बालिका स्कूल के सामने, आलू पोस्ता के पास, बड़ाबाजार, कोलकाता, प. बंगाल, भारत- 700007
फोन : 033-71481571

◆ उड़ीसा कार्यालय ◆
सुरेश मुंदडा
नौपाडा, पो. खेतराजपुर, जिला-संबलपुर, उड़ीसा, भारत- 768003
मो. 9437061417

◆ यूएसए ◆
5501 रीजेंसी ड्राइव, शुगर लैंड, मेट्रो ह्यूस्टन, TX, यूएसए- 77479
फोनः +1-919-610-7106 (USA)
ईमेलः mundra.arun@gmail.com

◆ यूनाइटेड किंगडम ◆
76 रोज़नेथ एवेन्यू, लीसेस्टर, LE4 7GT, यूके
फोनः + 44 7703827595
ईमेलः kishorjain@hotmail.co.uk

१० मकर संक्रान्ति पर्व...
१४ गणतन्त्र दिवस...
१७ बसंत पंचमी...

१८ विपश्यना ध्यान के...
३६ देश के महर्षि दधीचि तपस्या...

जनवरी २०२६ के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' फरवरी २०२६ री विशेषतावां

अगला अंक

'सोजत'

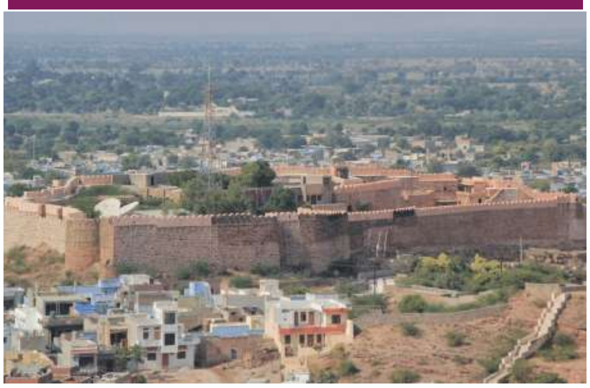

'सोजत' राजस्थान के पाली जिले में सुकड़ी नदी के किनारे बसा एक ऐतिहासिक शहर और तहसील मुख्यालय है, जो अपनी मेंहदी के लिए विश्व प्रसिद्ध है, इसे 'मेंहदी की नगरी' भी कहते हैं, यहाँ का सोजत दुर्ग, सेजल माता मंदिर और प्राकृतिक सुंदरता इसे महत्वपूर्ण बनाती है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution

Somani

SOMANI ISPAT PRIVATE LIMITED

Largest Distributor and Stocklist of Iron & Steel material in Southern India

Sanjay Kumar Somani
92465 34957

Sudhir Kumar Somani
98490 24065

Aakash Somani
99080 99081

PRODUCTS

Long Products

- M.S Angles
- M.S Channels
- M.S Beams
- M.S Beams
- Narrow Parallel Flange Beams (NPB)
- Universal Columns
- TMT Bars / Rebbar
- M.S Pipes
- Rails & Crane Rails
- M.S Rounds & Squares

Flat Products

- M.S. Sheets / Plates
- Chequered Plates
- Sailma / High Tensile
- Boiler Quality Plates
- Sail Hard Plates
- M.S Flats

GET IN TOUCH

Hyderabad
11-6-2711 & 2 3, Balanagar,
Opposite IDPL Factory,
Hyderabad - 500 037 (T.S.)
Tel: **+91-040-23771871**
Cell:: **+91-98980 99081**
Email: **somani@smai.com**

Vizag
Plot No - 28, D Block Extn.
Behind SAIL Stock Yard, Autonagar,
Visakhapatnam - 530 012 (A.P.)
Tel: **+91-891-2754499**
Cell:: **+91-90080 42034**
Email: **somani@somai.com**

www.somanisteel.com

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष-२०, अंक ११, जनवरी २०२६

१२ अंक वार्षिक १२००/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आह्वान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

मो. 9702205252

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक

स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...

सम्पादकीय कार्यालय

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059. दूरध्वनि - 022- 4015 8094

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
mainbharathunfoundation@gmail.com

अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

https://www.facebook.com/merarajasthanpatrika/
https://x.com/merarajasthan01
https://www.instagram.com/mera_rajasthan10/
https://www.youtube.com/@Merarajasthan10

कृपया विज्ञापन बिल, सदस्यता शुल्क के साथ सहयोग राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908 UPI No.

संपादकीय ....

नए साल के शुभागमन पर कुछ प्रण कर लें???

वर्ष २०२५ तो जैसे-तैसे बीत ही गया, बहुत कुछ अच्छा भी हुआ और कुछ गलत भी हुआ, लेकिन जैसे-तैसे हमने वर्ष २०२५ पूरा कर ही लिया।

वर्ष २०२६ में प्रवेश के साथ 'मेरा राजस्थान' परिवार का सुखद हो, ऐसी मनोकामना!

वर्ष २०२५ में वर्षों से लगातार लड़ा जा रहा एक अभियान 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए, इंडिया नहीं, एक राष्ट्र एक नाम केवल 'भारत' को भारत सरकार ने पूर्ण समर्थन तो नहीं दिया, लेकिन इतना तो कर ही दिया, भारत सरकार ने अपने हर कार्यों में INDIA की जगह 'भारत' नाम का उपयोग करना शुरू कर दिया, यह मैं 'मेरा राजस्थान' व 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के लिए आंशिक सफलता मानता हूं।

वर्ष २०२६ की शुरुआत पर 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' परिवार ने भारत के पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी से निवेदन किया है कि आगामी १० सालों के बीच यानी शुरुआत पर ही भारत राष्ट्र का और एक नाम गुलामी की निशानी INDIA नाम का खात्मा करें, क्योंकि मोदी जी ने यह वायदा किया है, इसके लिए 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' ने भारत सरकार को निवेदन भी भेजा है जो 'मेरा राजस्थान' के प्रस्तुत अंक के पेज क्रमांक ३ पर छपा भी है (कृपया अवलोकन जरूर करें)

भारत में गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिले, जिसके लिए प्रतिबद्ध है 'मेरा राजस्थान' परिवार, जिसके पाठक आज भारत ही नहीं विश्व के कोने-कोने में फैले हुए हैं,सभी की इच्छा है कि गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिलना ही चाहिए, विश्वास दिलाता हूं कि 'गौमाता' को जल्द ही राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, हरियाणा, असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड राज्य सरकार के मुख्यमंत्री, पशुपालन मंत्री और गौसेवा आयोग विभाग को निवेदन किया जा चुका है, जहां से सकारात्मक उत्तर भी प्राप्त हुआ है।

'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों को बता देना चाहता हूं कि महाराष्ट्र सरकार ने 'गौमाता' को 'राजमाता' का सम्मान दे चुकी है। विश्वास दिलाता हूं कि 'भारत' अहिंसा प्रेमी राष्ट्र को बहुत जल्द यानी की २०२६ में 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान भी भारत सरकार जरूर प्रदान करेगी, बस विश्व में फैले हम राजस्थानी, 'भारत सरकार' से निवेदन करें, क्योंकि 'भारत सरकार' का मानस तो है ही।

'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान दिया जाना चाहिए, इसके लिए भारतीय लोकसभा से प्रयागराज के कांग्रेसी सांसद उज्जवल रमन सिंह जी ने प्रश्न भी उठाया है कि 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान दिया जाना चाहिए? जिस पर जल्द ही विचार भी किया जाएगा और कुछ सकारात्मक निर्णय भी जल्द ही हम भारतीयों के समक्ष आएगें।

हम सब मिलकर नए साल २०२६ का सुस्वागत सकारात्मक रूप से करें।

'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों, विज्ञापनदाताओं, शुभचिंतकों से निवेदन है कि वर्ष २०२६ में अच्छा करें, अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, ताकि २०२६ 'भारत' का अच्छा हो और विश्व में 'भारत' राष्ट्र का सम्मान बढे, ऐसी शुभकामनाओं के साथ, एक बार फिर से नूतन वर्षाभिनंदन।

जय जय राजस्थान! जय गौमाता! जय भारत!

SBI BANK — for payment

HDFC BANK — for payment

आपका अपना
- बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का आह्वान
करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

भारत को भारत ही बोलें INDIA नहीं, जय भारत!

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

Remove INDIA Name From The Constitution

A Timeless Legacy,
Inspiring Fashion
For Generations.
come home to
Siyaram's
Scan the QR Code and
Watch the Video
Available at all the leading retail outlets and Siyaram's Shops across the country. For trade/corporate enquiries,
contact: 022-68330500. Toll-free No.: 1800 209 4005. For franchise enquiries, contact: 09820197273.
Email: enquiries@siyaram.com | www.siyaram.com Follow us on:

SIGNATURE 2, 3, 4 & 5 BHK DECK RESIDENCES STARTING AT ₹1.89CR.

Upper Govind Nagar, Goregaon East | **900 400 2018**

www.agarwalgroup.net.in

Homewell Realty LLP

Agrawal Golden Chamber, Plot No. 13/A, Behind Balaji Telefilms,
Fun Republic Road, Off New Link Road, Andheri-(West), Mumbai- 400053

May this year be your best one yet, full of growth, adventure, and success!

Happy New Year

Subject to Mumbai Jurisdiction

Sailesh Nandwana

98201 25824

Nandwana Transport Services

BRANCHES

Sakinaka : PLOT NO. F. LAKDAWALA COMPOUND, 90 FEET ROAD, SAKINAKA, KURLA, ANDHERI ROAD, MUMBAI- 40072
MOBILE 98207 36561 / 88795 98633, EMAIL: SAKINAKA@NANDWANA BIZ

Dongri: SHOP NO 4. SUMS BUILDING, DR. MISHERI ROAD, NEAR DONGRI MARKET, DONGRI, SANDHURST ROAD, MUMBAI 400 009
MOBILE: 99307 71814 / 98207 38662, EMAIL MASJIDBUNDER@NANDWANA.BIZ

Bhayander: SHOP NO. 5, JAI GURU KRIPA APARTMENT, SAMSHAN ROAD, VIMAL DAIRY LANE, BHAYANDER (EAST), THANE 400105
MOBILE: 98207 13953, 2804 4374 EMAIL: BHAYNDER@MANDWANA.BIZ

Vasai: TOPAZ INDUSTRIAL ESTATE, OPP. BLUE CHIPS, GALA NO. 6. SALIVALI ROAD, NEAR VALIV FATA, VASAI (EAST), DIST. THANE-400105
MOBILE: 91677 31256, 98207 47115 TEL: 2450199, 2458823, EMAIL: VASAI@NANDWANA.BIZ

Bhiwandi: 14, MANIBAI COMPOUND, OPP. LAXMI SAW MILL. NEAR AAKASH WAREHOUSE, REHNAL VILLAGE, AGRA ROAD, BHIWANDI. DIST. THANE
MOBILE: 97692 00261, 91672 21848, EMAIL: BHIWANDI@NANDWANA.BIZ

Rabale: R/919, M.I.D.C., RABALE, THANE BELAPUR ROAD, BEHIND MAHAJAN HOSPITAL, NEAR GAONDEVI TALAO RABALE, NEW MUMBAI - 400701.
MOBILE: 98206 54973, 91672 21488 EMAIL: RABALE@NANDWANA.BIZ

Vapi: PLOT NO. A1/46, DEGAM ROAD, NEAR SARLA POLYESTER, 100 SHED AREA, G.I.D.C., VAPI - 396195
MOBILE : 70690 19927, 70690 19929, 70690 19930 TEL : (0260) 2452698, . EMAIL: VAPI@NANDWANA.BIZ

Damen: SURVEY NO. 747/748, KUNTA ROAD, KALARIA, NEAR BAJAJ ELECTRICALS GODOWN, NEXT TO KALARIA CHECK POST, NANI DAMAN.
MOBILE: 70690 19921, 70690 19922, 70690 19923, 70690 19924 EMAIL: DAMAN@NANDWANA.BIZ

Silvassa: DAN UDYOG INDUSTRIAL AREA, PLOT NO. 124/4, OPP. PIPARIA GARDEN, NEAR PIPARIA WEIGH BRIDGE, VAPI - SILVASSA MAIN ROAD, SILVASSA.
MOBILE: 70690 19925, 70690 19926 EMAIL: SILVASSA@NANDWANA.BIZ

Umbergaon: PLOT NO. 2/1, SANDEEP ENGINEERING WORKS, G.I.D.C. INDUSTRIAL ESTATE, NEAR KCC RAILWAY STATION ROAD, UMBERGAON, DIST. VALSAD.
MOBILE: 70690 19928 EMAIL: UMBERGAON@NANDWANA.BIZ

HO. Godown No 1, Unit No 2, Near Maharashtra Krishi Udyog,
Goregaon (E), Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400065
Ph: 022-685616161, 20886550, 20886551, 20886552, 9167150013, 9619360043, 9167949930

मकर संक्रान्ति पर्व

मकर संक्रांति
मुख्य रूप से सूर्य के धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करने (मकर संक्रमण) और उत्तरी गोलार्ध की ओर जाने (उत्तरायण) के कारण मनाई जाती है, जो ठंड के अंत और फसल कटाई के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है, यह दिन गंगा स्नान, तिल-गुड़ के सेवन, खिचड़ी बनाने और दान-पुण्य करने का महत्व रखता है, साथ ही यह भी मान्यता है कि इस दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनिदेव से मिलने गए थे और भीष्म पितामह ने इसी दिन देह त्यागी थी, जिससे इसका पौराणिक और धार्मिक महत्व और बढ़ जाता है।

मकर संक्रांति क्यों मनाई जाती है इसके कई धार्मिक और वैज्ञानिक कारण हैं?

सूर्य का उत्तरायण: इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और उत्तरायण (उत्तर दिशा की ओर) होने लगता है, जिससे दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं और सर्दी कम होती है, जो कृषि और जीवन के लिए शुभ माना जाता है।

पौराणिक मान्यताएं:

सूर्य और शनि का मिलन: माना जाता है कि इस दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनिदेव से मिलने उनके घर (मकर राशि) गए थे, जिससे पिता-पुत्र के संबंध मधुर हुए थे, इसलिए तिल चढ़ाने का महत्व है।

गंगा का सागर में मिलन: कहते हैं कि इसी दिन गंगा नदी कपिल मुनि के आश्रम से होते हुए सागर में मिली थी, इसलिए गंगा स्नान का विशेष महत्व है।

काल्पनिक चित्र

भीष्म पितामह का देह त्याग: महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपने शरीर का त्याग करने के लिए इसी दिन (उत्तरायण) को चुना था।

फसल और मौसम: यह नई फसल की कटाई और वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है, जो पूरे भारत में अलग-अलग नामों (पोंगल, लोहड़ी, खिचड़ी) से मनाया जाता है।

मकर संक्रान्ति का महत्व - शास्त्रों के अनुसार दक्षिणायण को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है, इसीलिए इस दिन जप-तप, दान स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है, ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुन: प्राप्त होता है, इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है, जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ट होता है -

माघे मासे महादेव : यो दास्यति घृतकम्बलम
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति

मकर संक्रान्ति के अवसर पर गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा

संकलित चित्र

दी गयी है। सामान्यत: सूर्य तभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक है, यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छ:-छ: माह के अन्तराल पर होती है। भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। मकर संक्रान्ति से पहले सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है, इसी कारण यहाँ पर रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम होता है किन्तु मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की ओर आना शुरु जाता है, अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा गरमी का मौसम शुरु हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक

शेष पृष्ठ ११ पर...

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ १० से... होगा तथा रात्रि छोटी होने से अन्धकार अधिक होगा। अत: मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होगी। ऐसा जानकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों द्वारा विविध रुपों में सूर्यदेव की उपासना, आराधना एवं पूजन कर, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाती है। सामान्यत: भारतीय पंचांग पद्धति की समस्त तिथियाँ चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती है, किन्तु मकर संक्रान्ति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है, इसी कारण यह पर्व प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही पड़ता है।

स्नान का महत्व

कहा जाता है कि मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान करने पर सभी कष्टों का निवारण हो जाता है इसीलिए इस दिन दान, तप, जप का विशेष महत्व है, ऐसी मान्यता है कि इस दिन को दिया गया दान विशेष फल देने वाला होता है।

मकर संक्रांति : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

भारत पर्वों एवं त्योहारों का देश है। यहाँ कोई भी महीना ऐसा नहीं है, जिसमें कोई न कोई त्यौहार न पड़ता हो, इसीलिए अपने देश में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि 'सदा दीवाली साल भर, सातों बार त्यौहार'। इन्हीं त्यौहारों में मकर संक्रांति भी है, जिसकी अपनी एक अलग ही विशेषता है एवं वैज्ञानिक आधार है। हम लोगों में से बहुत कम लोग जानते हैं कि मकर संक्रांति का पर्व क्यों मनाया जाता है और वह भी प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही क्यों? हम जानते हैं कि ग्रहों एवं नक्षत्रों का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, इन ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति आकाशमंडल में सदैव एक समान नहीं रहती है। हमारी पृथ्वी भी सदैव अपना स्थान बदलती रहती है। यहाँ स्थान परिवर्तन से तात्पर्य पृथ्वी का अपने पक्ष एवं कक्ष-पथ पर भ्रमण से है। पृथ्वी की गोलाकार आकृति एवं अक्ष पर भ्रमण के कारण दिन-रात होते हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सम्मुख पड़ता है वहाँ दिन होता है एवं जो भाग सूर्य के सम्मुख नहीं पड़ता, वहाँ रात होती है। पृथ्वी की यह गति दैनिक गति कहलाती है किंतु पृथ्वी की वार्षिक गति भी होती है और यह एक वर्ष में सूर्य की एक बार परिक्रमा करती है। पृथ्वी की इस वार्षिक गति के कारण इसके विभिन्न भागों में विभिन्न समयों पर विभिन्न ऋतुएँ होती है जिसे ऋतु परिवर्तन कहते हैं। पृथ्वी की इस वार्षिक गति के सहारे ही गणना करके वर्ष और मास आदि की गणना की जाती है, इस काल गणना में एक गणना 'अयन' के संबंध में भी की जाती है। इस क्रम में सूर्य की स्थिति भी उत्तरायण एवं दक्षिणायन होती रहती है, जब सूर्य की गति दक्षिण से उत्तर होती है तो उसे उत्तरायण एवं जब उत्तर से दक्षिण होती है तो उसे दक्षिणायण कहा जाता है।

संक्रमणकाल और मकर संक्रांति

इस प्रकार पूरा वर्ष उत्तरायण एवं दक्षिणायन दो भागों में बराबर-बराबर बँटा होता है, जिस राशि में सूर्य की कक्षा का परिवर्तन होता है, उसे संक्रमण काल कहा जाता है। चूँकि १४ जनवरी को ही सूर्य प्रतिवर्ष अपनी कक्षा परिवर्तित कर दक्षिणायन से उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करता है, अत: मकर संक्रांति प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही मनायी जाती है। चूँकि हमारी पृथ्वी का अधिकांश भाग भूमध्य रेखा के उत्तर में यानी उत्तरी गोलार्द्ध में ही आता है, अत: मकर संक्रांति को ही विशेष महत्व दिया गया। भारतीय ज्योतिष पद्धति में मकर राशि का प्रतीक घड़ियाल को माना गया है जिसका सिर एक हिरण जैसा होता है, किंतु पाश्चात्य ज्योतिषी मकर राशि का प्रतीक बकरे को मानते हैं। हिंदू धर्म में मकर (घड़ियाल) को एक पवित्र पशु **शेष पृष्ठ १२ पर...**

२०२६
शुभ का म ना
नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
VIKAS JHUNJHUNWALA
MOB: 9820083782
SHREE KRISHNA PAPERS
Dealers of Craft Paper
5 Jolly Bhavan No.2, 7, New Marinelines, Churchgate,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400020
Ph.: 022-26838668
Email: shreekrishnapaper@yahoo.co.in

२०२६
शुभ का म ना
नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
MOHINI ORGANICS PVT LTD.
MANUFACTURERS
EMULSIFIERS & SURFACTANTS
GLYCEROL ESTERS — SORBITAN ESTERS
FATTY ALCOHOL ESTERS — GLYCOL ESTERS
HIGH POLYOL ESTERS — POLYSORBATES & ETHOXYLATES
PLASTIC LUBRICANTS — PEG ESTERS
210, Mahavir Industrial Estate, Kachpada,
Ramchandra Lane Extn.
Malad West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 064
Tel: 022-68944002/ 022-66669159 | Mob: 9757200115
Email: info@mohiniorganics.com
Website: www.mohiniorganics.com

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ ११ से... माना जाता है। चूँकि हिंदुओं में अधिकांश देवताओं का पदार्पण उत्तरी गोलार्द्ध में ही हुआ है, इसलिए सूर्य की उत्तरायण स्थिति को ये लोग शुभ मानते हैं। मकर संक्रांति के दिन सूर्य की कक्षा में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर हुआ परिवर्तन माना जाता है। मकर संक्रांति से दिन में वृद्धि होती है और रात का समय कम हो जाता है। इस प्रकार प्रकाश में वृद्धि होती है और अंधकार में कमी होती है। चूँकि सूर्य का स्रोत हैं, अत: इस दिन से दिन में वृद्धि हो जाती है। यही कारण है कि मकर संक्रांति को पर्व के रुप में मनाने की व्यवस्था हमारे भारतीय मनीषियों द्वारा की गई है।

प्रगति का पर्व - गीता के आठवें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा भी सूर्य के उत्तरायण का महत्व स्पष्ट किया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'हे भरतश्रेष्ठ! ऐसे लोग जिन्हें ब्रह्म का बोध हो गया हो, अग्निमय ज्योति देवता के प्रभाव से जब छह माह सूर्य उत्तरायण होता है, दिन के प्रकाश में अपना शरीर त्यागते हैं, पुन: जन्म नहीं लेना पड़ता है, जो योगी रात के अंधेरे में, कृष्ण पक्ष में, ध्रूम देवता के प्रभाव से दक्षिणायन में अपने शरीर का त्याग करते हैं, वे चंद्रलोक में जाकर पुन: जन्म लेते हैं। वेदशास्त्रों के अनुसार, प्रकाश में अपना शरीर छोड़नेवाला व्यक्ति पुन: जन्म नहीं लेता, जबकि अंधकार में मृत्यु प्राप्त होनेवाला व्यक्ति पुन: जन्म लेता है। यहाँ प्रकाश एवं अंधकार से तात्पर्य क्रमश: सूर्य की उत्तरायण एवं दक्षिणायन स्थिति से ही है। संभवत: सूर्य के उत्तरायण के इस महत्व के कारण ही भीष्म ने अपना प्राण तब तक नहीं छोड़ा, जब तक मकर संक्रांति अर्थात सूर्य की उत्तरायण स्थिति नहीं आ गई। सूर्य के उत्तरायण का महत्व छांदोगय उपनिषद में भी किया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सूर्य की उत्तरायण स्थिति का बहुत ही अधिक महत्व है। सूर्य के उत्तरायण होने पर दिन बड़ा होने से मनुष्य की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है जिससे मानव प्रगति की ओर अग्रसर होता है। प्रकाश में वृद्धि के कारण मनुष्य की शक्ति में भी वृद्धि होती है और सूर्य की यह उत्तरायण स्थिति चूँकि मकर संक्रांति से ही प्रारंभ होती है, यही कारण है कि मकर संक्रांति को पर्व के रुप में मनाने का प्रावधान किया गया है और इसे प्रगति तथा ओजस्विता का पर्व माना गया जो कि सूर्योत्सव का द्योतक है।

भीष्म पितामह की कथा: महाभारत के अनुसार, भीष्म पितामह ने स्वेच्छा से अपने शरीर को त्यागने के लिए उत्तरायण के समय (मकर संक्रांति) का इंतजार किया था, माना जाता है कि इस समय मृत्यु होने पर मोक्ष मिलता है।

काले कपड़े पहनने की परंपरा: महाराष्ट्र जैसे कुछ राज्यों में इस दिन काले कपड़े पहने जाते हैं क्योंकि संक्रांति सर्दियों में पड़ती है और काला रंग गर्मी सोखता है, जो वैज्ञानिक रूप से भी सही है।

वैज्ञानिक और भौगोलिक आधार

विटामिन-ए का स्रोत: पतंग उड़ाने की परंपरा का वैज्ञानिक कारण यह है कि लोग लंबे समय तक धूप में रहते हैं, जिससे शरीर को विटामिन-ए मिलता है और त्वचा की बीमारियां दूर होती हैं।

सेहत के लिए तिल और गुड़: तिल और गुड़ दोनों की तासीर गर्म होती है, जो सर्दियों के मौसम में शरीर को अंदरूनी गर्मी और ऊर्जा प्रदान करते हैं।

दिनों का बढ़ना: खगोलीय रूप से, इस दिन से सूर्य उत्तरी गोलार्ध की ओर मुड़ जाता है, जिससे रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं।

मकर संक्रांति 'भारत' का एक प्रमुख त्योहार है, जिसे विशेष रूप से पतंगबाजी के लिए जाना जाता है। २०२६ में यह पर्व १४ जनवरी को पूरे उत्साह के साथ मनाया जाएगा।

मकर संक्रांति और पतंग का महत्व

धार्मिक मान्यता: माना जाता है कि पतंग उड़ाकर हम **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से... देवताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और सूर्य देव का स्वागत करते हैं।

काल्पनिक चित्र

स्वास्थ्य लाभः कड़ाके की ठंड के बाद, छत पर पतंग उड़ाने से शरीर को सूरज की कोमल धूप और विटामिन-डी मिलता है, जो त्वचा और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

एकता का प्रतीकः इस दिन छतों पर पूरा परिवार और दोस्त इकट्ठा होते हैं, जिससे सामाजिक मेलजोल बढ़ता है।

प्रमुख आकर्षण

गुजरात (उत्तरायण): अहमदाबाद में भव्य अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव का आयोजन होता है, जहाँ दुनिया भर से लोग अपनी अनोखी पतंगें लेकर आते हैं।

राजस्थानः जयपुर और जोधपुर जैसे शहरों में 'पेच' लड़ाने की प्रतियोगिताएं होती हैं और आसमान रंग-बिरंगी पतंगों से भर जाता है।

जरूरी सामग्री

पतंग: कागज या पन्नी से बनी विभिन्न आकारों की पतंगें।

मांझाः पतंग उड़ाने वाला धागा। (पक्षियों की सुरक्षा के लिए सूती धागे या 'सद्दा' का उपयोग करें)।

चरखी (फिरकी): धागे को लपेटने और छोड़ने के लिए इस्तेमाल होने वाला रील।

काल्पनिक चित्र

सुरक्षा निर्देश निवेदन ' मेरा राजस्थान' पत्रिका का।

पक्षियों का ध्यान रखेंः पक्षियों को चोट पहुँचाने वाले 'चाइनीज मांझे' का उपयोग न करें।

खुली जगहः हमेशा बिजली के तारों और ऊबड़-खाबड़ छतों से दूर सुरक्षित स्थान पर पतंग उड़ाएं।

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर सभी भारतवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

Aman Soni
Mob:-9836166651/6291172214

Mayank Soni
Mob:- 91632 82168

Mahabir Jewellers & Sons Llp

We are wholesaler n manufacturer of silver &gold coins
Silver articles & ornaments
Gold & diamond jewellery

54, Block-C, Bangur Avenue, Kolkata- 700055

31/B, Adi BansTalla Lane, Burra Bazar, 1st FLOOR,
Kolkata, West Bangal. Bharat- 700 007
Ph: +91 33-35538393 E-mail: Aman_soni54@yahoo.in

२०२६ शुभ कामना

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

Suresh Kumar Harlalka
भ्रमणध्वनिः 09435028744

BAJRANG STORES

R.K. BOSE ROAD, P.O. DHUBRI, ASSAM, BHARAT-783301

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'मेरा राजस्थान' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठको को

२६ जनवरी २०२६

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

'गणतन्त्र दिवस' भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष २६ जनवरी को मनाया जाता है, इसी दिन सन् १९५० को ब्रिटिश सरकार अधिनियम (एक्ट) (१९३५) को हटाकर 'भारत का संविधान' लागू किया गया था, एक स्वतंत्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को २६ नवम्बर १९४९ को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और २६ जनवरी १९५० को इसे एक लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया। २६ जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि १९३० में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी.) ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था, यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है, अन्य दो स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती है।

भारतीय संविधान, जिसे देश की सरकार की रूपरेखा का प्रतिनिधित्व करने वाले पर्याप्त विचार-विमर्श के बाद विधानमंडल द्वारा अपनाया गया, तब से २६ जनवरी को भारत के गणतंत्र दिवस के रुप में भारी उत्साह के साथ मनाया जाता है और इस दिन राष्ट्रीय अवकाश भी घोषित होता है।

यह आयोजन हमें देश के सभी शहीदों के नि:स्वार्थ बलिदान की याद दिलाता है, जिन्होंने आज़ादी के संघर्ष में अपने जीवन बलिदान कर दिए और विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध अनेक लड़ाइयाँ जीतीं।

इतिहास : भारत के संविधान को लागू किए जाने से पहले भी २६ जनवरी का बहुत महत्व था। २६ जनवरी को विशेष दिन के रुप में चिन्हित किया गया था। ३१ दिसंबर सन् १९२९ के मध्य रात्रि में राष्ट्र को स्वतंत्र बनाने की पहल करते हुए लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई थी कि यदि अंग्रेज सरकार २६ जनवरी १९३० तक भारत को उपनिवेश पद (Dominian States) नहीं प्रदान करेगी तो 'भारत' अपने को पूर्ण स्वतंत्र घोषित कर देगा।

गणतंत्र दिवस पर गोरखा राइफल्स की परेड: २६, जनवरी, १९३० तक जब अंग्रेज़ सरकार ने कुछ नहीं किया, तब कांग्रेस ने उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पहली बार तिरंगे को फहराया गया था, परंतु इस दिन सर्वसम्मति से एक और महत्त्वपूर्ण फैसला लिया गया कि प्रतिवर्ष २६ जनवरी का दिन पूर्ण स्वराज दिवस **शेष पृष्ठ १६ पर...**

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

2026
शुभकामना

JAGDISH DANGRA
Mob: 7550087833

R.D. CREATION

New 19, (Old 10), Bunder Street, Rukhmani Ramiah Nivas,
Near Flower Bazaar Police Station, Chennai
Tamil Nadu, Bharat- 600001
Email: rdcreation@hotmail.com

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

AN ISO 9001 COMPANY

TAPARIA®
AN ISO-9001 CO.

TAPARIA®

HAND TOOLS ARE AN EXTENSION OF HUMAN HAND.

"TAPARIA" TOOLS LAST A LIFE TIME.

Hammer

Pincer

Pipe Wrench

VDE Plier

Head Office :- 423/424, A-2, Shah & Nahar, Lower Parel (W), Mumbai - 400013. | Tel: 022 - 6147 8646
E-mail: sales@tapariatools.com | Visit : www.tapariatools.com | CIN : L99999MH1965PLC013392
Works: 52-B, M.I.D.C., Satpur, Nashik - 422007 | Tel: 0253 - 2350 317 | E-mail: nashik@tapariatools.com
Marketed & Distributed by : M/s Orient Agency Private Ltd

Follow us on

पृष्ठ १४ से... के रुप में मनाया जाएगा, इस दिन सभी स्वतंत्रता सैनानी पूर्ण स्वराज का प्रचार करेंगे, इस तरह '२६ जनवरी' अघोषित रुप से भारत का स्वतंत्रता-दिवस बन गया उस दिन से १९४७ तक स्वतंत्रता प्राप्त होने तक २६ जनवरी को ही स्वतंत्रता दिवस के रुप में मनाया जाता रहा।

भारतीय संविधान-सभा : भारतीय संविधान सभा की बैठकें होती रहीं, जिसकी पहली बैठक ९ दिसंबर, १९४६ को हुई, जिसमें भारतीय नेताओं और अंग्रेजी कैबिनेट मिशन ने भाग लिया। भारत का एक संविधान बनाने के

गणतंत्र दिवस परेड में महाराष्ट्र राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाली एक नाव

विषय में कई चर्चाएँ, सिफारिशें और वाद-विवाद हुआ, कई बार संशोधन करने के पश्चात् भारतीय संविधान को अंतिम रुप दिया गया जो ३ वर्ष बाद यानी २६ नवंबर, १९४९ को आधिकारिक रुप से अपनाया गया। १५ अगस्त, १९४७ को अंग्रेजों ने भारत की सत्ता की बागडोर जवाहरलाल नेहरु के हाथों में दे दी, लेकिन भारत का ब्रिटेन के साथ नाता या अंग्रेजों का आधिपत्य समाप्त नहीं हुआ। भारत अभी भी एक ब्रिटिश कॉलोनी की तरह था, जहाँ की मुद्रा पर जार्ज ६ की तस्वीरें थी, आज़ादी मिलने के बाद तत्कालीन सरकार ने भारत के संविधान को फिर से परिभाषित करने की जरुरत महसूस की और संविधान सभा का गठन किया, जिसकी अध्यक्षता डॉ.भीमराव अम्बेडकर ने की थी। २५ नवम्बर, १९४९ को २११ विद्वानों द्वारा २ महीने और ११ दिन में तैयार भारत के संविधान को मंजूरी मिली।

सन १९५०, प्रथम गणतंत्र दिवस में पं. जवाहरलाल नेहरु ने कहा : २४ जनवरी, १९५० को सभी सांसदों और विधायकों ने इस पर हस्ताक्षर किया और दो दिन बाद यानी २६ जनवरी, १९५० को संविधान लागू कर दिया गया, इस अवसर पर डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रुप में शपथ ली तथा २१ तोपों की सलामी के बाद इर्विन स्टेडियम में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराकर भारतीय गणतंत्र के ऐतिहासिक जन्म की घोषणा की गयी। २६ जनवरी का महत्व बनाए रखने के लिए विधान निर्मात्री सभा (कांस्टीट्यूएंट असेंबली) द्वारा स्वीकृत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरुप को मान्यता प्रदान की गई, इस तरह से २६ जनवरी एक बार फिर सुर्खियों में आ गया, यह एक संयोग ही था कि कभी भारत का पूर्ण स्वराज दिवस के रुप में मनाया जाने वाला दिन अब भारत का गणतंत्र दिवस बन गया था, अंग्रेजों के शासनकाल से छुटकारा पाने के ८९४ दिन बाद हमारा भारत स्वतंत्र राष्ट्र बना, तब से आज तक हर वर्ष राष्ट्र भर में बड़े गर्व और हर्षोल्लास के साथ 'गणतंत्र दिवस' मनाया जाता है। तदनंतर स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रुप में स्वीकार किया गया, यही वह दिन था, जब १९६५ में 'हिन्दी' भाषा को भारत की राजभाषा घोषित किया गया, जो आज भी 'राष्ट्रभाषा' का सम्मान नहीं ले पायी है। भारत को केवल 'भारत' ही बोलें **India** नहीं, जय भारत!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
2026
शुभ कामना
NARENDRA K. DAMANI
Mob: 9820424751/9323656202
SHREENATHJI & CO
ROTAMIC
(Hydraulic & Pneumatic Seals for Industries & Earthmoving)
Regd. Off:
Vikrant Bhawan CHS, Plot No. 21, Room No. A-20, Gorai-1, Nr. Gorai Bridge , Bh. Mangalmurti Hospital, Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400091
Tel: 022-28670262 Fax: 022-28670263
e-mail : ndamani2001@yahoo.com

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी सनातनियों का प्रसिद्ध त्यौहार है, कुछ इस त्योहार को सरस्वती पूजा के नाम से जानते है। बसंत पंचमी को 'बसंत पंचमी' भी कहा जाता है, यह एक ऐसा त्योहार है, जो बसंत के आगमन की प्रांरभिक तैयारियों को चिह्नित करता है, जो भारत में अलग अलग क्षेत्रों में विभिन्न तरीकों से मनाया जाता है, यह त्योहार माघ के महीने की शुक्ल पंचमी के दिन, प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।

देवी सरस्वती को विद्या की देवी कहा जाता है, इस दिन माँ सरस्वती की पूजा की जाती है, क्योंकि प्राचीनकाल से इसे ज्ञान और कला की देवी मां सरस्वती का जन्मदिवस माना जाता है। 'बसंत पंचमी त्योहार' देवी सरस्वती को समर्पित त्योहार है, जो ज्ञान, भाषा, संगीत और सभी कलाओं की देवी हैं, इस त्योहार पर महिलायें पीले रंग की कपड़े पहनती हैं और पीले रंग के व्यंजन बनाती है भारत में पूरे साल को छः मौसमों में बांटा जाता है, जिसमें से बसंत सबका प्रिय मौसम होता है, इस महीने में खेत सरसों के पीले रंग के फूलों से भर जाता है।

'बसंत पंचमी' को होली के त्योहार की तैयारी का प्रतीक भी माना जाता है, जो कि इसके ४० दिन बाद आती है। बसंत पंचमी में विष्णु और काम देव की पूजा भी की जाती है, शास्त्रों में बसंत पंचमी को ऋषि पंचमी से उल्लेखित किया गया है। पुराणों-शास्त्रों तथा अनेक काव्यग्रंथों में भी अलग-अलग ढंग से बसंत पंचमी का उल्लेख मिलता है। माँ सरस्वती की पूजा करने से अज्ञान भी ज्ञान का दीप जलाता हैं, इस दिन लोग अपने घरों में पीले रंग के व्यंजन बनाते हैं, कुछ पीले रंग के चावल बनाते हैं तो कुछ केसर का उपयोग करते हैं। सरस्वती को वागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं, बसंत पंचमी के दिन को इनके प्राकटोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। ऋग्वेद में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती धीनामणित्रयवतु।

अर्थात ये परम चेतना हैं, सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं, हममें जो आचार और मेधा है उसका आधार भगवती सरस्वती ही हैं, इनकी समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है।

बसंत पंचमी कथा

प्रारंभिक काल में भगवान शिव की आज्ञा से ब्रह्मा जी ने जीवों और मनुष्य की रचना की थी परन्तु ब्रह्मा जी अपने रचना से संतुष्ट नही थे तो ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु की आराधना की, तब विष्णु से उनके समक्ष प्रकट हुए। ब्रह्मा जी ने अपनी समस्या विष्णु जी के सामने रखी, परन्तु विष्णु जी के पास उनकी समस्या का हल नहीं था, इसलिए दोनों ने आदिशक्ति दुर्गा माता का आव्हान किया, तब दुर्गा माता प्रकट हुई और उनकी समस्या के हल के लिए अपने शरीर में से देवी सरस्वती को प्रकट किया, तभी से सभी जीवों को वाणी प्राप्त हुई, इस प्रकार देवी सरस्वती का जन्म हुआ था।

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
२०२६
शुभ का म ना

FOMRA
ELECTRICALS

"FOMRA BUILDING" 250, Govindappa Street,
Parrys, Chennai - 600 001
Tel : 044-43410000 (30 Lines) Email : info@fomra.co.in

Branches :
93, Armenian Street, Channai - 600 001 Tel : 25229212 / 0596
New No. 1109 (Old No.780), A.R. Complex, Avinashi Road, Coimbatore-641018
Avinashi Road, Coimbatore - 641018 Tel : 0422-2387745 / 4518080
website : www.fomra.co.in

विपश्यना ध्यान के साधक

डॉ. वल्लभभाई कथीरिया
पूर्व सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री, भारत सरकार
पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रीय कामधेनु आयोग (भारत सरकार) एवं गुजरात गौ सेवा आयोग (गुजरात सरकार), प्रसिद्ध कैंसर चिकित्सक

डॉ. वल्लभभाई कथीरिया एक दूरदर्शी नेता हैं, जिनका जीवन सार्वजनिक सेवा और आध्यात्मिकता में गहराई से रचा-बसा है, आप विपश्यना ध्यान के साधक हैं और 'Nothing but Hard Work Succeeds (कठोर परिश्रम के अलावा कोई विकल्प नहीं)' के मंत्र में दृढ़ विश्वास रखते हैं, आपने २१वीं सदी के महान, गौरवशाली और दिव्य भारत के निर्माण के संकल्प के साथ अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया है।

➩ शैक्षणिक एवं चिकित्सकीय पृष्ठभूमि

डॉ. कथीरिया ने गुजरात के अहमदाबाद स्थित बी.जे. मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. एवं एम.एस. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं, आप वे एक प्रतिष्ठित कैंसर सर्जन हैं और दीर्घकाल से सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा के प्रति समर्पित रहे हैं।

➩ राजनीतिक जीवन

डॉ. वल्लभभाई कथीरिया ने गुजरात के राजकोट लोकसभा क्षेत्र से लगातार चार बार (a तक) ११वीं, १२वीं, १३वीं एवं १४वीं लोकसभा में सांसद के रूप में सेवा की। वर्ष १९९८ में १२वीं लोकसभा चुनाव में आपने ३,५४,८१६ मतों के रिकॉर्ड अंतर से विजय प्राप्त की, जो उस समय भारत में सर्वाधिक था। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में आपने भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उपक्रम मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में केंद्रीय राज्य मंत्री के रूप में महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया।

➩ गौसेवा एवं पर्यावरणीय कार्य

राष्ट्रीय कामधेनु आयोग तथा गुजरात गौसेवा आयोग के अध्यक्ष के रूप में डॉ. कथीरिया ने गौसेवा के प्रचार-प्रसार में ऐतिहासिक भूमिका निभाई, आपने कृषि, स्वास्थ्य और पर्यावरण में गौसेवा के महत्व को रेखांकित करते हुए आर्थिक, सामाजिक और मानवीय विकास में योगदान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्थापित किया।

➩ सार्वजनिक सेवा एवं प्रमुख उपलब्धियाँ

डॉ. कथीरिया को सौराष्ट्र क्षेत्र में चेक डैम और जल संचयन संरचनाओं पर किए गए कार्यों के लिए 'चेक डैम सांसद' के रूप में विशेष पहचान मिली। वर्ष २००१ के गुजरात भूकंप के दौरान आपने बचाव, राहत और पुनर्वास कार्यों में सक्रिय योगदान दिया, आप भारत के एकमात्र ऐसे राजनेता हैं जिन्होंने १३४ बार रक्तदान किया है, इसके अतिरिक्त आप श्री अरविंदभाई मणियार ट्रस्ट (राजकोट), सद्भावना ट्रस्ट (महुवा), आदर्श सेवा मंडल (पाटनवाव), वसुंधरा ट्रस्ट (राजकोट) तथा 'जीसीसीआई ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ काउ बेस्ड इंडस्ट्रीज़' सहित अनेक सामाजिक एवं परोपकारी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

➩ सम्मान एवं पुरस्कार

डॉ. कथीरिया को दादाभाई नौरोजी इंडस्ट्रियल पीस एंड डेवलपमेंट अवार्ड, भारत विकास परिषद द्वारा राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार तथा सामाजिक सेवाओं के लिए आईआईएफसी, दिल्ली द्वारा 'भारत ज्योति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

➩ संगठनात्मक योगदान

डॉ. कथीरिया को कई बड़े राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों का सफल संचालन किया है, जिनमें जायंट इंडस्ट्रियल शो २०००, एग्रो विज़न २००२ (राजकोट का ऐतिहासिक कृषि मेला), नेशनल बुक फेयर २००३, आरोग्य मेला २००४ तथा गौ टेक २०२३ प्रमुख हैं।

➩ प्रकाशन एवं लेखन

डॉ. कथीरिया ने चिकित्सा, राजनीति, समाज और पर्यावरण से जुड़े विषयों पर अनेक लेख लिखे हैं, जो प्रतिष्ठित गुजराती समाचार पत्रों और राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

➩ आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण

अपने आध्यात्मिक मार्ग से प्रेरित होकर डॉ. कथीरिया ने जीवन को समाज सेवा के लिए समर्पित किया है, आप परिश्रम और perseverance में अटूट विश्वास रखते हैं तथा सामाजिक एवं पर्यावरणीय उत्थान के साथ-साथ समृद्ध भारत के निर्माण में गौसेवा की केंद्रीय भूमिका पर विशेष बल देते हैं। जय भारत! जय गौमाता!

२०२६ शुभ कामना
नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

Shrikant Lalchand Dalmia Trust
Trustee
SHARAD SHRIKANT DALMIA
SHAILESH SHRIKANT DALMIA
SANDEEP SHRIKANT DALMIA

Dalmia Bhavan , 4 Bunglow, Rani Sati Marg, Malad East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat 400097
Email: : dalmiashrikant@gmail.com | Mob: 9820087142

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

गऊ सेवा के चमत्कार

अनादिकाल से मानवजाति 'गौमाता' की सेवा कर हमारे जीवन को सुखी, समृद्ध, निरोग, ऐश्वर्यवान एवं सौभाग्यशाली बनाती चली आ रही है, गौमाता की सेवा के माहात्म्य से शास्त्र भरे पड़े हैं। शास्त्रों की गौ महिमा की कुछ झलकियों प्रस्तुत हैं:

गौ को घास खिलाना कितना पुण्यदायी

तीर्थ स्थानों में जाकर स्नान दान से जो पुण्य प्राप्त होता है, ब्राह्मणों को भोजन कराने से जिस पुण्य की प्राप्ति होती है, सम्पूर्ण व्रत-उपवास, तपस्या, महादान तथा हरि की आराधना करने पर जो पुण्य प्राप्त होता है, सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा, सम्पूर्ण वेदों के पढ़ने तथा समस्त यज्ञों के करने से मनुष्य जिस पुण्य को पाता है, वही पुण्य बुद्धिमान पुरुष गौमाता को ग्रास खिलाकर प्राप्त कर लेता है।

गी सेवा से वरदान की प्राप्ति

गौ की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करता है, उस पर संतुष्ट होकर गौमाता उसे अत्यंत दुर्लभ वर प्रदान करती है।

गौ सेवा से मनोकामनाओं की पूर्ति

गौ की सेवा यानी गाय को चारा डालना, पानी पिलाना, गाय की पीठ सहलाना, रोगी गाय का ईलाज करवाना आदि करने वाले मनुष्य पुत्र, घन, विद्या, सुख आदि जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है, वे सब उसे प्राप्त हो जाती हैं, उसके लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती।

भूमि दोष समाप्त होते हैं

गौ का समुदाय जहां बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थान की शोभा को बढ़ा देता है और वहां के सारे पापों को खींच लेता है।

सबसे बड़ा तीर्थ गौ सेवा

देवराज इंद्र कहते हैं-गौ में सभी तीर्थ निवास करते हैं, जो मनुष्य गाय की पीठ स्पर्श करता है और उसकी पूंछ को नमस्कार करता है, वह मानों तीर्थों में तीन दिनों तक उपवासपूर्वक रहकर स्नान कर लेता है।

असार संसार के छः सार पदार्थ

भगवान विष्णु, एकादशी व्रत, गंगानदी, तुलसी, ब्राह्मण और गाय ये छः सार इस दुर्गम असार संसार से मुक्ति दिलाने वाले हैं।

मंगल होगा

जिसके घर बछड़े सहित एक भी गाय होती है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते है और उसका मंगल होता है।

गोपूजा - विष्णुपूजा

भगवान् विष्णु देवराज इन्द्र से कहते हैं कि हे देवराज! जो मनुष्य अस्वस्थ वृक्ष और गौ की पूजा-सेवा करता है, उसके द्वारा देवताओं, असुरों और मनुष्यों सहित सम्पूर्ण जगत की भी पूजा हो जाती है, उस शेष पृष्ठ २० पर...

2026 नूतन वर्ष में सब घुल-मिल जाए 2026
हर जीवन में ख़ुशियाँ लाए
वर्ष २०२६ सुख पूर्वक व स्वास्थ पूर्वक हो
जय भारत! वंदे मातरम!
Pannalal Dugar (B.Com-LLB)
Son of
Late Surajmal Dugar
Smt. Sridevi Dugar
Mob: 9324104324
Native Place - Bidasar, Dist. Churu, Rajasthan
Paper Pack Group Of Industries
14-A, Paper Box Estate, Mahakali Road,
Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400093

पृष्ठ १९ से... रूप में उसके द्वारा की हुई पूजा को मैं यथार्थ रूप से अपनी पूजा मानकर ग्रहण करता हूँ।

गोधली महान पापों की नाशक है

गायों के खरों से जठी हुई धूलि, धान्य की धूलि तथा पुट के शरीर में लगी धुलि अत्यत पवित्र एवं महापापों का नाश करने वाली है।

चारों कार्य सामान हैं

नित्य भागवत का पाठ करना, भगवान् का चिंतन, तुलसी को सींचना और गौ की सेवा करना, ये चारों कार्य समान है।

गौसेवा के चमत्कार

गौ के दर्शन, पूजन, नमस्कार, परिक्रमा, गाय को सहलाने, गौग्रास देने तथा जल पिलाने आदि सेवा के द्वारा मनुष्य को दुर्लभ सिद्धिया प्राप्त होती हैं।

गौसेवा से पूर्ण होती हैं मनोकामनाएँ

गाय के शरीर में सभी देवी-देवताओं, ऋषि मुनि, गंगा आदि सभी नदियाँ तथा तीर्थ निवास करते हैं, इसीलिये गौसेवा से सभी की सेवा का फल मिल जाता है। गौ को प्रणाम करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है, अतः सुख की इच्छा रखने वाले बुद्धिमान पुरुष को गायों को निरंतर प्रणाम करना चाहिए। ऋषियों ने सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रथम किया जाने वाला धर्म गौसेवा को ही बताया है।

प्रातःकाल सर्वप्रथम गाय का दर्शन करने से जीवन उन्नत होता है। यात्रा पर जाने से पहले गाय का दर्शन करके जाने से यात्रा मंगलमय होती है, जिस स्थान पर गाय रहती है, उससे काफी दूर तक का वातावरण शुद्ध एवं पवित्र रहता है, अत: गोपालन करना चाहिए। भगवान विष्णु भी गौसेवा से सर्वाधिक प्रसन्न होते हैं, गौसेवा करने वाले को अनायास ही गोलोक की प्राप्ति हो जाती है, प्रातःकाल स्नान के पश्चात सर्वप्रथम गाय का स्पर्श करने से पाप नष्ट होते हैं।

गौदुग्ध - धरती का अमृत

गाय का दूध धरती का अमृत है, विश्व में गौ दुग्ध के समान पौष्टिक आहार दूसरा कोई नहीं है, गाय के दूध को पूर्ण आहार माना गया है, यह रोग निवारक भी है, गाय के दूध व का कोई विकल्प नहीं है, यह एक दिव्य पदार्थ है, वैसे भी गाय के दूध. घी का सेवन करना, गौमाता की महान सेवा करना ही है, क्योंकि इससे गोपालन को बढ़ावा मिलता है और अप्रत्यक्ष रूप से गाय की रक्षा ही होती है। गाय के दूध घी का सेवन कर गौमाता की रक्षा में योगदान तो सभी दे ही सकते हैं।

पंचगव्य

गाय के दूध, दही, घी, गोबर रस, गौ-मूत्र का एक निश्चित अनुपात में मिश्रण पंचगव्य कहलाता है।

पंचगव्य का सेवन करने से मनुष्य के समस्त पाप उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं, जैसे जलती आग से लकड़ी भस्म हो जाती है। मानव शरीर का ऐसा कोई रोग नहीं है, जिसका पंचगव्य से उपचार नहीं हो सकता, पंचगव्य से पापजनित रोग भी नष्ट हो जाते हैं। जय गौमाता! जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

LINEN MONARCH
FABRICS THAT BREATHE !
PRESSCOTT
PREMIUM COTTON FABRICS

Karni Textile Mills Pvt. Ltd. | Karni Textile Industries LLP.
23/137, Gate No. 892, Shahpur Road, Ichalkaranji-416115 Kolhapur, Maharashtra | Grampanchayat, N No.1698/11, 12, Godown, Gala No.E/105, Swagat Complex, Rahnal, Bhiwandi, Thane-421 302 | P-12, New Howrah Bridge Approach Road, 2nd Floor, Baiju Chowk, Kolkata-700 001.
E-mail: sales@karnimills.com Website: www.karnimills.com

वर्ष २०२६ सभी के लिए सुख-समृध्दी व स्वास्थ्य पूर्वक हो
2026
शुभ का म ना
Saurabh (bunty) Lakhotiya
Mob: 9425216004
Amit Lakhotiya
Mob: 7389905040
POOJA AGENCIES
WE ENSURE YOUR CURE FOR SURE
KIRTI PHARMA
111, 1St Floor, Medical Complex,
Raipur, Chhattisgarh, Bharat- 492001
Ph: 0771-2235615, 4003837
Email: poojaagencies2000@gmail.com

गोवर्धन पूजा से प्रकृति प्रेम का संदेशः मृदुल कांत

मुंबईः 'आपणो राजस्थान' परिवार के संयोजन में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह के दिन श्री कृष्ण बाल लीला, असुरों का वध, इंद्र अहंकार मर्दन एवं प्रकृति प्रेम के लिए गोवर्धन पूजा आदि प्रसंगों की कथा प्रस्तुत की गई।

मालाड पूर्व, वेस्टर्न एक्सप्रेस वे स्थित ओमकार अल्टा मोंटे इमारत, सी-टॉवर के पी-3 पार्किंग परिसर में आयोजित कथा का व्यासत्व करते हुए पूज्य मृदुलकांत शास्त्री (वृंदावन धाम) ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण के पैदा होने के बाद कंस उनका वध करने के लिए अपनी सर्वाधिक बलवान राक्षसी पूतना को भेजता है। पूतना भगवान श्रीकृष्ण को जहरीला दूध पिलाने का प्रयास करती है, लेकिन भगवान श्रीकृष्ण उसके प्राण लेकर उसका उद्धार करते हैं, इसी तरह अनेक असुरों का उद्धार करने के साथ ही यमुना में अत्याचार करने वाले कालिया नाग का मर्दन कर ब्रज वासियों को निश्चिंत किया।

व्यासपीठ से पूज्य आचार्य मृदुल कांत शास्त्री महाराज ने कहा कि मनुष्य में प्रकृति के प्रति आस्था एवं प्रेम उत्पन्न करने के साथ इंद्र के अभिमान का मर्दन करने के लिए गोवर्धन पूजा का आयोजन कराया। कार्तिक माह में ब्रजवासी भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए पूजा की तैयारी करते हैं। भगवान कृष्ण द्वारा ब्रजवासियों को भगवान इंद्र की पूजा करने से मना करते हुए गोवर्धन महाराज की पूजन करने की बात कहते हैं, इसके बाद सभी गोवर्धन की पूजा करते हैं, इससे क्रोधित इंद्र 'ब्रज' क्षेत्र में एक सप्ताह तक भारी वर्षा करते हैं। समस्त ब्रजवासी परेशान हो जाते हैं, उनकी रक्षा करने के लिए भगवान श्री कृष्ण गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठ अंगुली पर उठा लेते हैं और नगर वासियों को पर्वत को नीचे बुला लेते हैं, अंततः हार कर इंद्र वर्षा बंद कर देते हैं। ब्रह्मा जी द्वारा इंद्र को कृष्ण अवतार बताने के बाद इंद्र क्षमा याचना करते हैं, इस मौके पर कथा मंडप में भगवान को छप्पन भोग अर्पित किया गया। कथा में केके अडूकिया, विजय कुमार बगड़िया, सुनील गुप्ता, संजय चौधरी, राधेश्याम कमालीया, हर्ष सरावगी, विनोद चौधरी, उमाशंकर खेमका, योगेश झुन्झुनुवाला, किशन गुप्ता, वेदप्रिय कसेरा, कमल भानावत, अविनाश गुप्ता, मनीष नेमानी, अंकित चौधरी, रचना गनेरीवाल, उर्वी अग्रवाल, भूमिका पोद्दार, प्रीति अडूकिया, हीना बगड़िया, स्वाति जाखोडीया, सीमा कैंया, निधि कमालिया, दीपा तोशनीवाल आदि उपस्थित थे।

2026
शुभ का म ना
नूतन वर्ष में सब घुल-मिल जाए
हर जीवन में खुशियाँ लाए
वर्ष २०२६ सुख पूर्वक व स्वास्थ पूर्वक हो
AMBER®
Fashionable Textile Shoppee
CUTTACK - BHUBANESWAR
Manik Chand Mundhra
Mob: 9437017262
Sunil Kumar Mundhra
Mob: 9473014989
Manoj Kumar Mundhra
Mob: 9437027723
Ashok Kumar Mundhra
Mob: 9437047723

गायों की सेवा करो, और बचाओ जान।
सदियों का इतिहास हमारा, गौ-संवर्धन अपनाना है
बिजय कुमार टिबड़ेवाल
भ्रमणध्वनिः ९४३७०५३९९३
2026
शुभ का म ना
GOMATA SEVA FORUM
एक प्रयास......गौमाता की और
गुगल प्लेस्टोर से ऍप डाउनलोड करें और गौसेवा में जुडें
Section-8 Company Incorporated Under Companies Act, 2013
Regd. Off: Plot No. 30/542, Radhekunj, Gajapati Nagar,
Press Chhak Bhubaneswar, Odisha-751005, Tel: 9437053993
email: info@gomata.in, Website: www.gomata.in

६४ दिवसीय श्री शाकम्भरी ध्वजा पदयात्रा

कोलकात्ताः १९०० किलोमीटर की करुणा–यात्रा, जहाँ शीत, धुंध और कठिनाइयाँ भी माँ के चरणों में नतमस्तक हो गई

२९ अक्टूबर २०२५ को कोलकाता की पावन धरती पर स्थित श्री शाकम्भरी माता मंदिर, गणेश टॉकीज, काली कृष्ण टैगोर स्ट्रीट से जब माँ शाकम्भरी की दिव्य ध्वजा उठी, उस क्षण केवल एक यात्रा का आरंभ नहीं हुआ, उस दिन आस्था ने अपने चरण बढ़ाए और माँ स्वयं भक्तों के साथ चल पड़ीं। लगभग १९०० किलोमीटर की यह ६४ दिवसीय श्री शाकम्भरी ध्वजा पदयात्रा केवल दूरी नहीं नापती, बल्कि श्रद्धा, समर्पण और सनातन चेतना के अनगिनत भावों को अपने आँचल में समेटती चली गई। यह दिव्य अभियान श्री शाकम्भरी भक्त मंडल के तत्वावधान में प्रारंभ हुआ, जिसकी विस्तृत जानकारी श्री शाकम्भरी परिवार, आसनसोल के समर्पित सेवक संजय सुलतानिया द्वारा साझा की गई, उनके अनुसार सहयोगी संस्था के रूप में श्री शाकम्भरी परिवार, आसनसोल ने इस महायात्रा को सेवा और संगठन की अद्भुत ऊर्जा प्रदान की, यह पदयात्रा बर्दवान, आसनसोल, ईसरी बाजार, बरही, चोपारण, सासाराम, काशी, प्रयागराज, कानपुर, इटावा, आगरा, भरतपुर, दौसा, जयपुर, गोविंदगढ़, खंडेला और उदयपुरवाटी जैसे असंख्य पड़ावों से गुजरती हुई २ जनवरी २०२६ को अरावली की गोद में बसे पावन शक्तिपीठ सकरायधाम पहुंच रही है, जहाँ ३ जनवरी २०२६, पौष पूर्णिमा के पवित्र दिवस पर शाकम्भरी जयंती के अवसर पर ध्वजा माँ के मंदिर शिखर पर सुशोभित होगी, इस यात्रा में भाई संदीप भौतिका एवं मनोज अग्रवाल माँ की ध्वजा को केवल कंधों पर नहीं, बल्कि अपने हृदय में धारण कर चल रहे हैं। कोलकाता शाकम्भरी माता मंदिर के मुख्य पुजारी विकास शर्मा प्रतिदिन माँ की रथ सेवा, पाठ और आरती से वातावरण को भक्तिरस में डुबो देते हैं, वहीं माँ के रथ के सारथी भाई गणेश जी, भाई योगेश जी और भाई बनवारी जी निःस्वार्थ सेवा में ऐसे लीन हैं, मानो उनकी सांसें भी रथ की गति बन गई हों, यात्रा की सबसे विलक्षण बात यह है कि माँ की असीम महिमा के कारण कड़कती ठंड, घनी धुंध और कठिन परिस्थितियों के बावजूद यह पदयात्रा कहीं भी नहीं रुकी, निरंतर, निर्बाध और निर्विघ्न आगे बढ़ती रही। ऐसा प्रतीत हुआ मानो शीत, कोहरा और थकान भी माँ के नाम के आगे नतमस्तक हो गई हों, इस पावन अभियान को मार्ग में पुलिस प्रशासन एवं विभिन्न राज्य सरकारों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रही है, पदयात्रियों की सुरक्षा हेतु पुलिस वैन एस्कॉर्ट निरंतर साथ चलती है, जिससे अनुशासन, सुरक्षा और सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत हो रही है, जहाँ-जहाँ यह यात्रा पहुँची, वहाँ भक्तों की आँखें नम हो उठीं, हाथ स्वतः जुड़ गए और आरती की लौ में अनकही प्रार्थनाएँ समर्पित हो गईं। पौराणिक ग्रंथों में वर्णित माँ शाकम्भरी की करुणामयी कथा आज भी हृदय को द्रवित कर देती है, जब दुर्गम नामक दैत्य के अत्याचार और सौ वर्षों के अकाल से धरती कराह उठी, तब आदिशक्ति माँ जगदंबा शाकम्भरी शताक्षी रूप में अवतरित हुईं। भक्तों की पीड़ा देखकर उनके सौ नेत्रों से बहे करुणामय अश्रुओं से धरती पर जल का प्रवाह हुआ, अन्न उपजा और जीवन पुनः जाग उठा, इस ६४ दिवसीय, १९०० किलोमीटर लंबी ध्वजा पदयात्रा का मूल उद्देश्य माँ शाकम्भरी के समस्त भक्तों को एक परिवार के रूप में जोड़ना, टूटे मनों को आश्रय देना और माँ की महिमा को जन-जन तक पहुँचाना है, इस महायज्ञ को दिशा देने में श्री शाकम्भरी भक्त मंडल के सेवाव्रती स्तंभ श्री अशोक ढेढिया, श्री बजरंगलाल बजाज, श्री रजनीश बजाज, श्री नीरज सुलतानिया, श्री सुरेश ढाढरिया, श्री संतोष शाह, श्री अभिषेक भैतिका, श्री अमित क्याल एवं श्री हेमंत थरड का समर्पण माँ की कृपा का ही प्रत्यक्ष प्रमाण है, यह पदयात्रा इस शाश्वत सत्य की साक्षी बन रही है कि जब संकल्प शुद्ध हो और माँ की कृपा साथ हो, तब दूरी केवल संख्या रह जाती है और हर कदम स्वयं एक तीर्थ बन जाता है।

जय शाकम्मरो माता! जय भारत!

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

श्री ढांढण सत्संग समिति ने पूर्ण किए ५१ वर्ष

कोलकाता: श्री ढांढणवाली टीडा–गेला दादीजी की कृपा से स्थापित श्री ढांढण सत्संग समिति, कोलकाता ने अपने गठन के ५१ वर्ष पूर्ण होने पर २०–२१ दिसंबर २०२५ को कोलकाता के द डिविनिटी पैवेलियन बैंक्वेट में भव्य दो दिवसीय स्वर्णोत्सव श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया। भव्य मंच, दादीजी सहित देवी-देवताओं की कलात्मक मूर्तियाँ, आकर्षक श्रृंगार, ५६ भोग एवं मनोहारी सजावट श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रही। लगभग २००० से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति में प्रथम दिवस मंगलपाठ, दीप प्रज्वलन, ओजस्वी प्रवचन एवं भक्ति-नृत्य हुए, जबकि द्वितीय दिवस देशभर से पधारे सुप्रसिद्ध भजन गायकों द्वारा लगभग ११ घंटे तक निरंतर भजन-गंगा प्रवाहित हुई।

समारोह में विशिष्ट अतिथियों एवं वरिष्ठ श्रद्धालुओं का सम्मान किया गया तथा समिति की आध्यात्मिक यात्रा पर आधारित ग्रंथ एवं स्मारिका का विमोचन हुआ, देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं के लिए उत्तम आतिथ्य-व्यवस्था की गई।

समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने सेवा-भाव से आयोजन को सफल बनाया। दो दिवसीय कार्यक्रम का संचालन समिति के कोषाध्यक्ष इंद्रचंद बजाज ने अत्यंत सुव्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक किया।

पिछले पाँच दशकों से समिति भजन-कीर्तन, सत्संग एवं सेवा कार्यों के माध्यम से दादीजी की महिमा का प्रचार-प्रसार कर रही है। यह स्वर्णोत्सव श्रद्धा, सेवा, संगठन और भक्ति की एकता का अनुपम उदाहरण बनकर स्मरणीय रहा। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष किशन भरतिया, रामस्वरूप बजाज, आलोक मोर, अमीत भरतिया उपाध्यक्ष, सचिव राजेश भरतिया, दिनेश भरतिया, कृष्ण कुमार भरतिया, संयुक्त सचिव इंद्रचंद बजाज, कोषाध्यक्ष ज्योति कुमार बजाज चेयरमैन, वरिष्ठ सलाहकार समिति काशी प्रसाद बजाज कार्यकारिणी समिति आनंद मोर, महिला समिति मंजू भरतिया आदि और माननीय सदस्यगण का भरपूर योगदान रहा।

गोमाता के संपर्क में आने मात्र
से मनुष्य की सकारात्मक आभा बढ़ने लगती है

Kishan Lal Rathi
Mob :- 9425505049

Raunak Rathi
Mob :- 9831636062

Bishwanath Rathi
Mob :- 9827112033

B.N. TRADE
& AGENCIES

TEA MERCHENTS

Narmadapara, Raipur, Chhatishgarh,
Bharat - 492001, PH: 0771-4092712,
Email: bntraipur@yahoo.com

नूतन वर्ष में सब घुल-मिल जाए हर
जीवन में खुशियाँ लाए
वर्ष २०२६ सुख पूर्वक व स्वास्थ्य पूर्वक हो

2026
शुभ कामना

SANTOSH BANSAL
Mob.: 9819772001

Fussion Import Export
Pvt Ltd

Kelvin Silk Mills

384-K, Jitendra Mansion, Dabholkarwadi ,
Kalbadevi Road, Mumbai, Maharashtra,
Bharat- 400002

मकर संक्रांति पर पारंपरिक पकवान

तिल के लड्डू और गजक

मकर संक्रांति के अवसर पर तिल के लड्डू और गजक न केवल स्वादिष्ट व्यंजन हैं, बल्कि इनका सांस्कृतिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बहुत महत्व है।

विस्तार से जानकारी दी जा रही है:

➩ तिल के लड्डू: ये लड्डू मकर संक्रांति का सबसे मुख्य प्रसाद माने जाते हैं, इन्हें दो मुख्य तरीकों से बनाया जाता है:

तिल-गुड़ के लड्डू: भुने हुए सफेद या काले तिल को पिघले हुए गुड़ की चाशनी में मिलाकर गोल आकार दिया जाता है, गुड़ की सोंधी महक और तिल का कुरकुरापन इसे लाजवाब बनाता है।

तिल-मावा लड्डू : राजस्थान, विशेषकर जयपुर में, तिल और गुड़ के साथ मावा (खोया) मिलाकर लड्डू बनाए जाते हैं, जो बहुत ही नरम और स्वादिष्ट होते हैं।

➩ गजक

'गजक' अपनी कुरकुरी बनावट के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान के ब्यावर और जयपुर की गजक पूरे भारत में मशहूर है। गुड़ गजक: इसमें तिल और गुड़ को मिलाकर तब तक कूटा जाता है जब तक कि वह एकदम हल्का और परतों वाला न हो जाए।

चीनी की गजक: इसे गुड़ की जगह चीनी की चाशनी से बनाया जाता है, जिसका रंग सफेद होता है और यह बहुत ही ज्यादा कुरकुरी होती है।

गजक रोल: मावा और ड्राई फ्रूट्स भरकर गजक के रोल भी बनाए जाते हैं।

➩ तिल-गुड़ की अन्य वैरायटी

तिल पट्टी: इसे तिल को गुड़ या चीनी के साथ बेलकर पतले कागज की तरह बनाया जाता है।

तिलकुट: तिल को कूटकर उसमें गुड़ या बूरा (चीनी का पाउडर) मिलाकर तैयार किया जाता है।

मकर संक्रांति पर इनका महत्व:

आयुर्वेद: तिल और गुड़ दोनों की तासीर गर्म होती है, जो सर्दियों (जनवरी के महीने) में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और ऊर्जा देने में मदद करते हैं।

धार्मिक: इस दिन तिल का दान करना और तिल का सेवन करना शुभ माना जाता है। 'तिल गुड़ घ्या, गोड गोड बोला' (तिल गुड़ लो और मीठा बोलो) की कहावत इसी सौहार्द का प्रतीक है।

तिल पट्टी: तिल पट्टी राजस्थान की एक और मशहूर मिठाई है जो मकर संक्रांति २०२६ के दौरान हर घर और बाजार में देखने को मिलती है, यह मुख्य रूप से ब्यावर शहर की विशेषता मानी जाती है, क्योंकी 'ब्यावर की तिल पट्टी' पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

इसकी मुख्य विशेषताएं और जानकारी यहाँ दी जा रही हैं:

➩ **बनावट:** तिल पट्टी अपनी अत्यधिक पतली और कुरकुरी बनावट के लिए जानी जाती है, यह इतनी पतली होती है कि आर-पार देखा जा सकता है, फिर भी यह बहुत क्रिस्पी होती है।

➩ मुख्य सामग्री

सफेद तिल: उच्च गुणवत्ता वाले साफ किए हुए सफेद तिल।

चाशनी: इसे बनाने के लिए चीनी या गुड़ की एक तार की कड़ी चाशनी तैयार की जाती है।

इलायची और ड्राई फ्रूट्स: स्वाद बढ़ाने के लिए अक्सर इसमें बारीक कटे हुए पिस्ता या इलायची पाउडर मिलाया जाता है।

➩ बनाने की कला

इसे बनाना एक कला है जिसमें काफी मेहनत और कौशल की आवश्यकता होती है:

●भुने हुए तिलों को गर्म चाशनी में मिलाया जाता है।
●फिर इस मिश्रण की छोटी लोई को लकड़ी के पटरे पर रखकर बेलन से बहुत तेज़ी से बेला जाता है जब तक कि यह पूरी तरह से पतली और गोल न हो जाए।
●यह काम मिश्रण के ठंडा होने से पहले करना पड़ता है, वरना यह जम जाता है।

➩ प्रकार

चीनी वाली तिल पट्टी: यह सफेद रंग की और अधिक पारभासी होती है।

गुड़ वाली तिल पट्टी: यह हल्के भूरे रंग की होती है और स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक पसंद की जाती है।

तिलकुट

तिलकुट एक पारंपरिक भारतीय मिठाई है जो मुख्य रूप से बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में बहुत लोकप्रिय है, यह मकर संक्रांति त्योहार के दौरान विशेष रूप से बनाई और खाई जाती है।

तिलकुट क्या है?

'तिलकुट' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है: 'तिल' और 'कूट' जिसका शाब्दिक अर्थ है 'पिसा हुआ तिल'।

बनावट: यह तिल के बीजों और गुड़ या चीनी को एक साथ कूटकर या पीसकर बनाया जाता है। यह आमतौर पर बिस्कुट या डिस्क के **शेष पृष्ठ २५ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ २४ से... आकार का होता है।

प्रक्रिया: इसे बनाने के लिए काफी कौशल की आवश्यकता होती है, जहाँ तिल और चाशनी के मिश्रण को सही तापमान पर हथौड़े से पीटकर या रोलिंग पिन से बेलकर एक विशेष आकार और कुरकुरापन दिया जाता है।

क्षेत्रीय विशेषता: बिहार के गया शहर का तिलकुट अपनी अनूठी जलवायु और कारीगरों के विशेष कौशल के कारण विश्व प्रसिद्ध है।

तिलकुट के प्रकार

सामग्री के आधार पर तिलकुट मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं:

गुड़ तिलकुट: यह गुड़ से बनाया जाता है और इसका रंग गहरा भूरा होता है, यह सबसे पारंपरिक और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है।

शक्कर तिलकुट: यह अपरिष्कृत चीनी से बनता है और हल्के भूरे रंग का होता है।

चीनी तिलकुट: यह परिष्कृत चीनी से बनाया जाता है, जिसका रंग सफेद होता है।

स्वास्थ्य लाभ

तिलकुट सर्दियों में खाने के लिए एक आदर्श स्नैक है क्योंकि**?** तिल और गुड़ दोनों की तासीर गर्म होती है और ये शरीर को गर्मी और ऊर्जा प्रदान करते हैं। तिल प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्नीशियम और जिंक जैसे आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होता है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। गुड़ आयरन का एक प्राकृतिक स्रोत है।

दाल बाटी चूरमा

दाल बाटी चूरमा राजस्थान का एक बहुत ही लोकप्रिय, पारंपरिक और पौष्टिक व्यंजन है, जिसे अक्सर विशेष अवसरों और त्योहारों पर बनाया जाता है, यह व्यंजन तीन मुख्य घटकों से मिलकर बनता है: दाल, बाटी, और चूरमा।

यहाँ दाल बाटी चूरमा के बारे में मुख्य जानकारी दी जा तही है:

➩ बाटी

सामग्री: बाटी मुख्य रूप से गेहूं के आटे, सूजी, अजवाइन, नमक और घी के साथ बनाई जाती है।

तैयारी: आटे को गूंथकर छोटी गोल या चपटी लोइयां बनाई जाती हैं, इन्हें पारंपरिक रूप से ओवन (दनह), तंदूर या बाटी कुकर में धीमी आंच पर तब तक बेक किया जाता है जब तक कि वे सुनहरे और कुरकुरे न हो जाएं।

परोसना: गरमा-गरम बाटी को परोसने से पहले पिघले हुए देशी घी में पूरी तरह डुबोया जाता है।

➩ दाल

सामग्री: दाल बाटी के लिए आमतौर पर पाँच अलग-अलग दालों 'पंचमेल दाल' मिश्रण का उपयोग होता है, जिसमें मुख्य रूप से तुअर (अरहर), मूंग, मसूर, चना और उड़द दाल शामिल होती हैं।

तैयारी: दाल को मसालों, टमाटर, प्याज, और अंत में जीरा, हींग और घी का तड़का लगाकर तैयार किया जाता है, जिससे यह एक मसालेदार और समृद्ध स्वाद देती है।

➩ चूरमा

सामग्री: 'चूरमा' बाटी से ही बनाया जाता है, इसमें बाटी को तोड़कर, पीसकर या कूटकर उसका चूरा किया जाता है, फिर इसमें पिघला हुआ घी, गुड़ या पिसी हुई चीनी, इलायची पाउडर और ड्राई फ्रूट्स (काजू, बादाम) मिलाए जाते हैं।

तैयारी: यह एक मीठा व्यंजन है, जिसे भोजन के अंत में या दाल-बाटी के साथ खाया जाता है।

परोसने का तरीका

एक पारंपरिक राजस्थानी थाली में, गरमा-गरम घी में डूबी बाटी को बीच से तोड़कर उस पर मसालेदार दाल डाली जाती है, साथ में मीठा चूरमा, लहसुन की चटनी, मिर्ची टपोरे (तली हुई मिर्च) और ताज़ा छाछ परोसी जाती है। यह एक संपूर्ण, पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन होता है।

मावा बाटी

जादुई स्वाद वाली तिल मावा बाटी राजस्थान, विशेषकर जयपुर की एक सिग्नेचर मिठाई है, जिसे मुख्य रूप से मकर संक्रांति के अवसर पर बनाया जाता है, यह साधारण तिल के लड्डू का एक शाही और नरम संस्करण है।

तिल मावा बाटी की विशेषताएं:

बनावट: यह ऊपर से तिल की परत वाली और अंदर से मावा (खोया) के कारण बहुत ही नरम होती है।

सामग्री: इसमें भुने हुए तिल, ताजा मावा, बूरा (तगार) या पिसी चीनी, इलायची पाउडर और बारीक कटे हुए ड्राई फ्रूट्स (बादाम, पिस्ता) का उपयोग होता है।

स्वाद: तिल की सोंधी महक और मावे की मिठास मिलकर इसे बेहद खास बनाते हैं।

बनाने की संक्षिप्त विधि:

तिल भूनना: सफेद तिल को धीमी आंच पर हल्का सुनहरा होने तक भूनें और ठंडा होने पर दरदरा पीस लें।

मावा तैयार करना: मावे को कड़ाही में हल्का गुलाबी होने तक भूनें।

मिश्रण बनाना: जब मावा हल्का गुनगुना रह जाए, तो इसमें दरदरे पिसे तिल, इलायची और चीनी मिलाएं।

भरवा: बीच में ड्राई फ्रूट्स भरकर छोटी-छोटी गोल 'बाटी' का आकार दें।

फिनिशिंग: तैयार बाटी को साबुत भुने हुए तिलों में लपेटें ताकि वह दिखने में आकर्षक लगे।

स्वास्थ्य लाभ: चूँकि इसमें तिल और मावा होता है, यह प्रोटीन और कैल्शियम का अच्छा स्रोत है और सर्दियों के मौसम में शरीर को भरपूर ऊर्जा प्रदान करती है।

-श्रीमती संतोष जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ९१वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

कोलकाता: कोलकाता स्थित कला मंदिर सभागार में अत्यंत गरिमामय एवं भावपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका ने की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल सरकार की प्रभारी मंत्री (उद्योग, वाणिज्य एवं उद्यम विभाग तथा महिला एवं बाल विकास एवं सामाजिक कल्याण विभाग) डॉ. शशि पांजा रहीं, जिन्होंने दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं विशिष्ट अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन किया।

मुख्य अतिथि डॉ. शशि पांजा ने अपने संबोधन में सम्मेलन को एक ऐतिहासिक एवं राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाला संगठन बताया, उन्होंने कहा कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना भारत की आज़ादी से पहले कोलकाता में होना अपने आप में गौरव का विषय है। आज मारवाड़ी समाज देश के कोने-कोने में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। उन्होंने कोलकाता सहित देशभर में मारवाड़ी समाज द्वारा निर्मित धर्मशालाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अस्पतालों का उल्लेख करते हुए, सामाजिक सेवा के क्षेत्र में समाज के योगदान को अद्भुत बताया।

डॉ. पांजा ने कहा कि समाज ने दहेज प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों के उन्मूलन में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ी समाज के पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भागीदारी का उल्लेख करते हुए उन्होंने इंदुमति गोयनका को पहली मारवाड़ी महिला स्वतंत्रता सेनानी बताया, जो जेल गईं। अंत में उन्होंने सुंदर आयोजन के लिए सम्मेलन को बधाई दी एवं नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

2026
शुभ का म ना

Rajkumar Pugalia

CA with 45 years experience,
Areas of Expertise - Start up CxO, Project Execution & Set Up

Mob: 98675 44448

45 / 1201 Seawoods, Nri Complex, Palm Beach Road,
Sector- 54-56-58 Nerul, Navi Mumbai, Bharat- 400 706

समारोह की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन कुमार गोयनका ने सभी को ९१वें स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं और सम्मेलन की नौ दशकों से अधिक की गौरवशाली यात्रा को स्मरण किया। उन्होंने कहा कि सम्मेलन समाज सेवा, राष्ट्र निर्माण, शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक समरसता एवं संगठनात्मक एकता के क्षेत्र में निरंतर कार्य करता आ रहा है। गोयनका जी ने स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ी समाज की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि १८५७ के गदर, नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार एवं भारत छोड़ो आंदोलन में समाज ने आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक तथा साहित्यिक रूप से पूर्ण योगदान दिया। इन परिस्थितियों को देखते हुए स्व. ईश्वरदास जालान के नेतृत्व में २५ दिसंबर १९३५ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने वर्तमान समय में समाज के समक्ष बदलती चुनौतियों पर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने प्री-वेडिंग शूट, फिजूलखर्ची, विवाह में अनुचित आडंबर, बढ़ते तलाक जैसे विषयों पर आत्ममंथन का आह्वान करते हुए कहा कि इनका समाधान घर से शुरू करना होगा, उन्होंने युवा शक्ति और मातृशक्ति को संगठन की सबसे बड़ी पूंजी बताते हुए उन्हें साथ लेकर चलने पर बल दिया। साथ ही, समाज के त्योहारों के प्रचार-प्रसार, सदस्यता विस्तार एवं संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पुरस्कार चयन उपसमिति के चेयरमैन पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला की अध्यक्षता में सम्मान का चयन किया गया था। जिसके परिणामस्वरुप स्थापना दिवस समारोह में मोहन फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. सुनील श्रॉफ (चेन्नई) को अंगदान, ट्रांसप्लांट, डिजिटल हेल्थ एवं मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मेलन के सर्वोच्च सम्मान 'मारवाड़ी सम्मेलन राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान–२०२४' से सम्मानित किया गया। वहीं वरिष्ठ समाजसेवी श्री आत्माराम सोंथलिया को सम्मेलन के (२८वें राष्ट्रीय अधिवेशन में घोषित) 'नंदकिशोर जालान संगठन समर्पण सम्मान–२०२५' प्रदान किया गया।

सम्मान समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन कुमार गोयनका, मुख्य अतिथि डॉ. शशि पांजा, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण गिरधारी लाल गोयनका, राजकुमार मिश्रा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विवेक गुप्ता, राष्ट्रीय महामंत्री केदार नाथ गुप्ता, राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री द्वय पवन कुमार जालान, पवन कुमार बंसल एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनील मल्लावत द्वारा सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारियों ने तिलक, पगड़ी, शॉल, श्रीफल, माला, मानपत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

सम्मानित अतिथि डॉ. सुनील श्रॉफ ने अपने उद्बोधन में इस सम्मान का श्रेय मोहन फाउंडेशन के समर्पित कार्यकर्ताओं, अंगदाताओं एवं मरीजों को देते हुए अंगदान एवं नेत्रदान के लिए समाज से आगे आने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गिरधारी लाल गोयनका ने स्वागत भाषण दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजकुमार मिश्रा ने किया। राष्ट्रीय महामंत्री केदार नाथ गुप्ता ने कुशल मंच संचालन किया। इस अवसर पर सम्मेलन की मासिक पत्रिका 'समाज विकास' के विशेषांक का विमोचन भी किया गया।

समारोह में देशभर से आए पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों, पदाधिकारियों, प्रांतीय प्रतिनिधियों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम के आरंभ एवं समापन पर कोलकाता की सांस्कृतिक संस्था 'अमैच्योर एक्टर्स एसोसिएशन (AAA)' द्वारा राजस्थानी एवं हिंदी भाषा में प्रस्तुत नाटकों ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Next-Gen HEALTHCARE

- Healthcare Furniture
- Radiology
- Diagnostics

Innovative IMAGING

- Inkjet Print Media
- Office Essentials
- Digital Print Media

Dynamic SIGNAGE

- Media
- Digital Ink
- Equipments

Integrated E-Commerce Platform

Exclusive Deals • Wide Selection

www.vmscart.com

35+ Years of Trust

1500+ Exceptional Products

400+ Experienced Professionals

20+ Offices Nationwide

3 Manufacturing Facilities

Vinod Medical Systems Pvt. Ltd.

Certifications: ISO 9001:2008 • ISO 14001:2004 • ISO 13485:2003 • **CE • WHO-GMP**

Manufacturing Facility
Survey No. 211/18, Dadra Village,
U.T. of Dadra and Nagar Haveli – 396 193

Registered Office
KripaKunj, B1-2, Sai Nagar,
Near Atal Path Expressway,
Raipur, Chhattisgarh – 492 009

Corporate Office
119, OMKAR, The Summit Business Park,
1st Floor, B. L. Bajaj Road,
Prakashwadi,
Near W.E.H. Metro Station,
Andheri East, Mumbai – 400 093

Customer Care: Toll-Free: **1800 202 1988** | Tel: 022 2682 0517 | *customercare@vinodmedical.com*

With Best Compliments From

Suresh Rathi • Narayan Rathi • Vinod Jaisinghani • CA Manoj Rathi • Kailash Rathi

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! जय-जय राजस्थान

Remove **INDIA** Name From The Constitution

हरिकिशन बंग
महामंत्री ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन
मारवाड़ मूंडवा निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८४९०२४२०८

हरिकिशन जी 'मकर संक्रांति' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तेलंगाना में 'मकर संक्रांति' का पर्व सबसे बड़ा पर्व माना जाता है जिसे 'पोंगल' भी कहते हैं, जो बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, इस दौरान बहन, बेटियों को घर बुलाया जाता है। संक्रांति के अवसर पर सर्दियों में शरीर को लाभ प्रदान करने वाले भोजन और मिठाइयां बनाई जाती है, पूजा पाठ भी किए जाते हैं, यहां बसे राजस्थानियों द्वारा भी यह त्यौहार बड़ी ही उत्साह के साथ मनाया जाता है।

नववर्ष पर सभी सामाजिक बंधुओं से यही कहना चाहूंगा कि सब संगठित होकर रहें, आज जो परिस्थितिया बनी हुई हैं, उसे सुलझाने के लिए सबको संगठित होना जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी पहले की अपेक्षा अपने धर्म और समाज के प्रति अधिक जागरूक है, वे विभिन्न धार्मिक व सामाजिक गतिविधियों में सहभागी भी होते हैं। गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, क्योंकि गाय हम सनातनियों के लिए पूजनीय है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

हरिकिशन जी मूलतः राजस्थान स्थित 'मारवाड़ मूंडवा' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'हैदराबाद' में संपन्न हुई है, यहां आप चीनी (Sugar) के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'राजस्थानी सेवा संगठन' नल्लागुट्टा गांव के अध्यक्ष रहे हैं, सिकंदराबाद ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन के महामंत्री पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत

-मेरा राजस्थान

आलोक सिंहल
सीईओ श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा
बाड़मेर निवासी-पथमेड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनिः 8209930427

'गौमाता' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए आलोकजी कहते हैं कि वेदों में वेदलक्षणा 'गौमाता' का उल्लेख हुआ है, जो पूजनीय, दिव्य और पवित्र मानी जाती है, जो सिर्फ देना जानती है, जिस तरह मां अपने बच्चों को सिर्फ देना जानती है, इस तरह 'वेदलक्षणा गायमाता' प्रकृति को सिर्फ देती ही देती है। दूध के साथ गाय के प्रत्येक अंग से हमें कुछ ऐसे पदार्थ प्राप्त होते हैं, जो बहुत ही गुणकारी होते हैं, जिसके लिए उन्हें राष्ट्रीय प्राणी या राष्ट्रमाता का सम्मान मिलना ही चाहिए। गाय से मिलने वाला गोबर और गोमूत्र, अपने आप में इतने पवित्र होते हैं कि सनातन धर्म के कोई भी संस्कार उनके बगैर पूर्ण नहीं हो सकते, पंचामृत में भी गोमूत्र का उपयोग किया जाता है तभी वह पूर्ण होता है। मंदिरों में जितने भी देवी-देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, पंचगव्य प्रक्षालन के बिना पूर्ण नहीं होता। धरती माता और गौमाता दोनों ही बहने हैं, धरती का भोजन, गौमाता का गोबर है, जिसको ग्रहण कर धरती उपजाऊ बनती है, जिस क्षेत्र में गायों का संरक्षण होता है उस क्षेत्र की जमीन बहुत ही उपजाऊ होती है। गोबर को ग्रहण कर धरती माता जो अन्न,फल उत्पन्न करती है, वह गोमाता का भोजन है। धरती को उपजाऊ बनाने के लिए गौमाता का संरक्षण जरूरी है। गौमाता का मूत्र वैज्ञानिक रूप से एंटीबायोटिक है। धरती का एकमात्र गाय ऐसा प्राणी है, जिनके रोम रोम से सात्विक प्राणवायु का प्रवाह होता है। गाय की उपस्थिति से ही संपूर्ण वातावरण का शुद्धिकरण हो जाता है। १० ग्राम गाय के घी का यदि हम हवन करें तो १००० किलो ऑक्सीजन बनती है, ऐसी अनेक सैकड़ों चीज हैं जो 'वेदलक्षणा गाय' से प्रकृति व मानव को प्राप्त होती है, इसीलिए गाय 'राष्ट्रमाता' बनने के अधिकारिणी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम सनातन संस्कृति से आया हुआ है, भरत चक्रवर्ती से 'भारत' नाम पड़ा, इंडिया नाम का कोई अर्थ और उपयोग नहीं है, इसलिए हर भाषा में अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'। विश्व में हर देश के नाम हिंदी और इंग्लिश में एक ही है तो हमारे देश का भी नाम इंग्लिश और हिंदी में 'भारत' ही रहना चाहिए।

आलोकजी मूलतः जोधपुर के पास 'बाड़मेर' के निवासी हैं, पिछले २५ सालों से आप 'पथमेड़ा' गोशाला से जुड़े हैं। पथमेड़ा गोशाला के संस्थापक श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज की प्रेरणा से आप 'पथमेड़ा' गोशाला से जुड़े। वर्तमान में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। जय गौमाता! जय भारत!

- मेरा राजस्थान

ॲड. सन्तोष अग्रवाल

पूर्व अध्यक्ष जिला अग्रवाल सम्मेलन जमशेदपुर
नीमकाथाना निवासी-जमशेदपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9431139959

संतोष जी 'मकर संक्रांति' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि यह पर्व सभी सनातनियों के लिए मुख्य पर्व है। झारखंड में आदिवासी समाज द्वारा इसे 'टुसू पर्व' के रूप में मनाया जाता है, 'टुसू माता' की मूर्ति की मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजा अर्चना की जाती है और यह कार्यक्रम लगभग चार दिनों तक चलता है, चार दिन अलग-अलग रितियां मनाई जाती हैं और चौथे दिन नदी में मूर्ति का विसर्जन किया जाता है, यहां संक्राति पर बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें लाखों लोग उपस्थित होते हैं और स्थानीय निवासियों द्वारा नृत्य-संगीत व अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, सबसे अच्छी माता की मूर्ति बनाने वाले को पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। राजस्थानी समाज द्वारा इस दिन नदी किनारे टेंट लगाया जाता है और खिचड़ी का वितरण किया जाता है और भी कई क्रियाकलाप होते हैं।

यहां अग्रवाल समाज द्वारा 'अग्रसेन जयंती' बड़े ही धूमधाम से मनाई जाती है और यह एक सप्ताह तक चलता है, इस दौरान कई कार्यक्रम भी होते हैं।

नववर्ष पर समाज बंधुओं को यही संदेश है कि संगठित रहें और मिलकर कार्य करें, साथ ही समाज में बढ़ रही कुरितियां अर्थात प्री वेडिंग शूट, विवाह विच्छेद को बंद करना चाहिए।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, गाय सभी सनातनियों के लिए पूजनीय है, गाय है तो सब कुछ है, हमारे संस्कृत में भी कहा गया है कि गाय में ३३ कोटी देवी-देवताओं का वास होता है, इसीलिए गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि हम भारतीय हैं, अतः हमारे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

संतोष जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नीमकाथाना' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'जमशेदपुर' में संपन्न हुई है, यहां आप अधिवक्ता के रूप में कार्यरत रहे हैं, वर्तमान में सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। जमशेदपुर अग्रवाल सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। सन् १९७४ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के छात्र आंदोलन में सन्तोष जी की प्रमुख भूमिका रही थी और आपातकाल के दौरान इन्हें जेल में भी रहना पड़ा था। जय गौमाता! जय भारत!

- मेरा राजस्थान

एकता की पुकार : हैदराबाद जैन समाज आत्ममंथन करे

एक करोड़ की आबादी वाले महानगर हैदराबाद में, जहाँ जैन समाज की संख्या महज़ पचास हजार के आसपास है, वहाँ केवल ४१०० वोटों को लेकर गत दिनों जो घमासान मचा है, वह अब सिर्फ हैदराबाद तक सीमित नहीं रहा। देश के अलग-अलग शहरों से फोन आ रहे हैं, टिप्पणियाँ आ रही हैं और दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे समाज की छवि मजाक बनती जा रही है। सोचने की बात है, क्या यही वह पहचान है, जिसके साथ हम पहचाने जाते हैं?

क्या यही उदाहरण हम अगली पीढ़ी के लिए छोड़कर जा रहे हैं?

'जिस समाज ने संयम, शांति, अहिंसा और विवेक को अपनी पहचान बनाया', वही समाज आज मैं और तू, मेरी जीत-तेरी हार में उलझकर आपसी भाईचारे में ज़हर घोल रहा है, चुनाव एक प्रक्रिया है, संस्कार नहीं। पद अस्थायी होते हैं, 'लेकिन रिश्ते, विश्वास और समाज की गरिमा स्थायी होती है।'

सवाल यह नहीं है कि कौन जीता या कौन हारा, सवाल यह है कि क्या हमारा समाज हार गया ?

आज बाहर वाले हम पर हँस रहे हैं, उंगलियाँ उठा रहे हैं, यह किसी एक व्यक्ति, एक पैनल या एक विचारधारा की हार-जीत का मुद्दा नहीं है, यह पूरे हैदराबाद जैन समाज की फजीहत का विषय बन चुका है। अब भी समय है, कृपया इन झमेलों से बाहर आइए।

'कटुता, आरोप-प्रत्यारोप और अहंकार को यहीं विराम दीजिए'

एक-दूसरे को नीचा दिखाने में नहीं, एक-दूसरे को थामने में महानता है।

याद रखिए! 'हम अल्पसंख्यक हैं, लेकिन कमजोर नहीं'

'हम कम हैं, लेकिन संगठित हों तो प्रभावशाली हैं'

आइए, एकता और भाईचारे को

मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं।

विचार अलग हो सकते हैं,

फिर से अपनी ताकत बनाएँ, लायक उदाहरण छोड़िए, दिल अलग नहीं होने चाहिए, अपने समाज की मर्यादा बचाइए।

'आज अगर नहीं संभले, तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा' जय जिनेन्द्र....

-विजय उगमराम सुराणा
हैदराबाद

नमस्कार, Good Morning, Good Evening, जय हिंद की जगह अब 'जय भारत' ही बोलें
- बिजय कुमार जैन भ्रमणध्वनि: ९३२२३०७९०८

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

जीवन जीने की कला है सकारात्मकता

सकारात्मकता वास्तव में जीवन जीने की एक कला है, जिसमे निपुणता हमारे जीवन को एक नया नजरिया देती है, वो नज़रिया जिससे इंसान सिर्फ आगे ही बढ़ता है और हमेशा आत्मसंयमित तथा संतुलित रहता है, फिर चाहे जो परिस्थिति आए या जिस मोड़ पर वो खुद को खड़ा पाए, वो उसका सामना कर ही लेता है। सकारात्मकता हमारे दिमाग की एक अवस्था है, जिसमें आप यदि सकारात्मक ही सोचें अर्थात कैसा भी समय आया हो अच्छा या बुरा आप एक ही दिशा में विचार रखें, तो वो सकारात्मकता कहलाती है, ये वो अवस्था है जो सबको हासिल करना है, मुमकिन भी है पर वास्तविकता में उसकी तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान रहता है, क्योंकि उस तरफ आगे बढ़ने के लिए भी दिमाग में एक आशावादी सोच का होना ज़रूरी है।

सकारात्मक कैसे बनें:

सबसे महत्वपूर्ण ये बात है कि आपको सकारात्मक रहने का अभ्यास करना होगा, उसके लिए हमेशा अपनी सोच को उसी दिशा की ओर प्रेरित करना होगा, नकारात्मक विचार आते हैं ये सच है पर उनसे चिपकिए मत, उनसे दूर हो जाईए, वो ऐसे कि आपको जब भी लगे कि अब विचार अपनी दिशा से भटक रहे हैं, तो उसी समय एक ऐसा पल याद करें, दिन का या कुछ समय पहले का, जब आप किसी चीज़ से बहुत खुश हुए थे और आपको अच्छा लगा था, ऐसा करने से आप एकदम से अपनी दिशा बदली हुई महसूस करेंगे, अपने विचारों का निरिक्षण कीजिए, उन्हें एक सही दिशा दिखाइए, ऐसा दोहराते रहिए और इसी रीती पर अडिग रहिए, बस जैसे ही एक बार आपको सकारात्मकता ने आकर्षित कर लिया, बस फिर समझिये अच्छे दिन आ चुके हैं।

सकारात्मकता कब ज़रूरी:

ऐसा कोई समय निश्चित नहीं होता कि व्यक्ति को कम से कम तब तो सकारात्मक हो ही जाना चाहिए, बल्कि ये तो हमारे हर पल हर घंटे की ज़रूरत है, ऐसी सोच विकसित करने का भी कोई सही या गलत समय नहीं होता, बस जिस पल ठान लो और अपने दिमाग से कह दो कि ये अच्छा तरीका है, जीवन को बिताने का वो ही समय सही बन जाता है, एक शुरुआत कि ज़रूरत होती है और फिर प्रयास की, उसके बाद तो एक समय ऐसा आ ही जाता है कि आपकी आदत हो जाती है हर बात को पॉजिटिव लेने की।

सकारात्मकता क्यों ज़रूरी:

हम हमेशा देखते हैं कि जो होना होता है, वो होकर ही रहता है, चाहे उस दौर में हम संतुलित रहे हों या आत्मसंयम खो दें, तो क्यों ना अपने आप के अंदर वो सोच लाएं, वो सकारात्मकता लाएं कि चाहे जैसी परिस्थिति आ जाए हम नहीं हिलेंगे, उसका सामना पूरी हिम्मत से करेंगे तथा आशावादी रहेंगे, अतः एक सकारात्मक दिमाग ही आपको शांतिपूर्ण जीवन का अनुभव करा सकता है इसलिए ये होना ज़रूरी होता है।

सकारात्मक होना कहाँ ज़रूरी:

ये हर जगह काम आता है घर हो या ऑफिस, खुद के लिए हो या बाहरी दुनिया के लिए, यह हमें दूसरों से एक अगल पहचान दिलाता है क्योंकि इसका अपना प्रभाव होता है जो खुद को महसूस होता है और दूसरों को भी दिखता है। चाहे आप अपने जीवन की सबसे बड़ी ख़ुशी का सामना कर रहे हों या सबसे बड़ा दुःख देख रहे हों, ये दोनों जगह आपको अपना वर्चस्व दिखा ही देगा, आखिरी और महत्वपूर्ण बात, आप जब अपने जीवन के उद्देश्य को पाने निकलते हो तो निश्चित ही आप कड़ी मेहनत करते हो, फिर भी हार जाओ, ऐसा कितनी बार होगा कि आप दोबारा उस हार को अपनाकर फिर मेहनत करोगे, एक बार, दो बार, ज्यादा से ज्यादा तीन बार परन्तु यदि आप हार की अवस्था में भी सकारात्मक रहते हो तो, ये ज़रूर देखना कि चाहे जितना समय आपको लगने वाला हो, फिर भी आप लक्ष्य पर केंद्रित रहोगे, ये सकारात्मकता की ताकत है,इसलिए सकारात्मक रहिए, स्वस्थ रहिए, शारीरिक और मानसिक रूप से...

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

रसोई के दोस्त बनकर बिमारी को दूर भगाएं

हमारे साथ अकसर ही होता है कि कोई भी छोटी-मोटी तकलीफों के लिए भी हमें डॉक्टर के पास दौड़ना पड़ता है, यदि आप खुद घरेलू चीजों के गुणों के बारे में जानते हों तो शायद आपकी कुछ परेशानी तो दूर हो ही सकती है। आपको खुद यह जानकर आश्चर्य होगा कि आपके रसोई घर में ही इतनी दवाइयाँ होती हैं कि आप छोटी-छोटी समस्याओं पर खुद ही काबू पा सकते है।

इलायची- सांस की बदबू एक आम समस्या है, आप इसके लिए सुबह या शाम माउथ वॉश इस्तेमाल कर सकते हैं, परन्तु दिन में क्या उपाय हो यह सोचने की बात है, इसका सबसे अच्छा उपाय इलायची है, जिसका कोई साइड इफैक्ट भी नहीं होता, इलायची भारत में ही नहीं, अरब देशों में भी खूब इस्तेमाल की जाती है, इसमें एंटीसेप्टिक 'सिनोल' द्रव्य होता है, जो सांसों में दुर्गंध पैदा करने वाले बैक्टीरिया को मारता है, यदि आपकी सांस में ज्यादा बदबू हो तो इसे हटाने के लिए 'इलायची' के बीज कुछ देर चबाएँ और फिर थूक दें।

अजवायन- गले में खराश और कफ की वजह से चल रही खाँसी कितना परेशान करती है इसका अनुभव आपको तो होगा ही, आप तुरन्त आराम चाहते हैं जबकि डॉक्टर से आपका अपाइंटमेंट शाम का है, ऐसे में आपको अजवायन का सहारा लेना चाहिए। 'अजवायन' न सिर्फ खाँसी दूर करती है, बल्कि यह जमे हुए बलगम को भी बाहर निकालकर, आपकी श्वासनली को साफ करती है, यह शक्तिशाली एंटीसेप्टिक भी है। ज्यादा कफ होने की स्थिति में एक कप खौलते पानी में एक या दो चाय के चम्मच पर अजवायन १० मिनट तक उबालें, इस प्रकार तैयार की हुई चाय को दिन में ३ बार पिएं। अजवायन साइनस की तकलीफ को भी दूर करने में सहायक होती है, अगर आपको साइनस की समस्या है तो आपको अजवाइन जैसी गर्म और खुश्क वनस्पति की जरूरत है। अजवाइन श्वसन तन्त्र के इन्फेक्शन का पारंपरिक इलाज तो है ही, यह एक शक्तिशाली एंटीवायलर और एंटीबैक्टीरियल वनस्पति भी है। अजवाइन की एक-दो-चम्मच सूखी पत्तियाँ एक कप गर्म पानी में १० मिनट तक भिगोएँ। इस प्रकार तैयार किया गया काढ़ा दिन में तीन बार पीने से लाभ मिलता है।

दालचीनीः- सबसे आम समस्या पेट की खराबी होती है, दस्त लगने पर डिहायडेशन का खतरा बढ़ जाता है, ऐसे में दालचीनी बहुत ही फायदा करती है। दालचीनी की चाय बनाकर पीने से लाभ मिलता है। 'दालचीनी' एक प्राकृतिक एस्ट्रिजेंट (दस्त बांधने वाली) है, जो आंतों से पानी कम करती है, एक कप गर्म पानी में एक चम्मच दालचीनी पावडर डालें और १०-१५ मिनट तक इसे भिगो दें, फिर उबाल कर पी लें।

अदरकः- अदरक में एक तत्व पाया जाता है जिसे 'थ्रोम्बोक्सेन ए-२' के नाम से जाना जाता है, यह रक्त-वाहिकाओं को चौड़ा करने वाले तत्वों को नष्ट होने से बचाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो अदरक, रक्त प्रवाह को संतुलित करता है, जो माइग्रेन को रोकने के लिए जरुरी है। सिरदर्द से बचे रहने के लिए पिसी हुई ताजा अदरक जूस में डालकर पिएँ, रोज खाने में भी ताजे अदरक का इस्तेमाल काफी फायदेमंद होता है। अदरक कब्ज का भी दुश्मन है, बेहतर नतीजे के लिए ताजा अदरक लेकर कुचलें और एक चम्मच अदरक को एक कप गर्म पानी में १०-१५ मिनट तक भींगने दें, फिर अदरक को छानकर पानी पीया जाए।

पुदीनाः शरीर में गैस का उधम किसी आतंक से कम नहीं होता, गैस आपकी दिनचर्या को अस्त-व्यस्त कर देता है। गैस बढ़ने की एक वजह तनाव भी है। मिंट की चाय पीकर आप गैस के प्रकोप को मिटा सकते हैं, क्योंकि आपके पाचन तंत्र की यात्रा करते समय यह गैस को शांत करती है, इसलिए इससे तुरन्त आराम मिलता है। गैस से छुटकारा पाने के लिए सुबह-शाम एक-एक कप मिंट की चाय पिएँ। मिंट पुदीने के वर्ग का ही पौधा है, यह न मिलने पर पुदीना ले सकते हैं।

हल्दी- यदि आपने खूब तीखा तेल वाला भोजन लिया है और अब आप पेट की जलन से परेशान हैं तो तुरन्त थोड़ी हल्दी खा लें, फौरन आराम मिलेगा।

लौंग- दाँत में दर्द हो रहा हो तो लौंग के तेल की दो बूंद, रुई के फाहे पर डालें और उसे दर्द वाले दांत पर रख लें, यदि लौंग का तेल न हो तो पूरी लौंग को दर्द वाले हिस्से के वहाँ दबा दें, इसी तरह लौंग का तेल सर्दी, फ्लू और पैरों में होने वाला फंगल इंफेक्शन में भी बहुत फायदा करता है।

तिलः 'तिल' भी दांत दर्द दूर करने में सहायक होता है, तिल में करीबन सात दर्द विरोधी तत्व पाए जाते हैं, एक हिस्सा तिल और तीन हिस्से पानी लेकर उबालें, जब तक यह जलकर आधा न रह जाए, इसे ठंडा कर लें और फिर इससे दाँतों को साफ करें।

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

२०२६
शुभकामना

ADV. SANTOSH AGARWAL
पूर्व अध्यक्ष जिला अग्रवाल सम्मेलन जमशेदपुर
BSC.LLB
ADVOCATE
MOB: 94311 39959

58B, Suraj Tower, Pennar Road, Sakchi,
Jamshedpur, Jharkhand, Bharat- 831001
Email - santoshagarwaltata@gmail.com

गोबर दे रहा सोना

राजस्थानः आज अनेक देशों में भारत के 'गोवंश' की धाक जमी है। अमेरिका, ब्राजील, कुवैत, सिंगापुर, चीन, नेपाल, मालदीव जैसे देश भारत से गोमय आयात कर रहे हैं, इससे भारत में गोपालकों और अन्य संबंधित लोगों को रोजगार के अवसर मिल रहे हैं।

भारत में गोमय (गोबर) का खाद के रूप में प्रयोग होता ही आ रहा है, लेकिन अब दुनिया के अनेक देश खाद और कीटनाशक बनाने के लिए 'भारत' से गोमय आयात कर रहे हैं, एक रपट के अनुसार २०२४ में भारत ने ४०० करोड़ रुपए की कीमत का गोमय और इससे बने उत्पादों का निर्यात किया। भारत से २०२३ में १२५ करोड़ रुपए का ताजा गोमय निर्यात हुआ था, २०२३ में भारत ने ३८६ करोड़ रुपए का गोमय कई देशों को बेचा था। भारत से गोवंश के गोमय को सबसे अधिक मालदीव लेता है, इसके बाद क्रमशः अमेरिका, सिंगापुर, चीन, नेपाल, ब्राजील, अर्जेंटीना, आस्ट्रेलिया और संयुक्त अरब अमीरात हैं। कुछ समय से कुवैत समेत अरब के अनेक देशों में गोमय की मांग बढ़ रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार कुछ दिन पहले कुवैत में एक शोध हुआ है, इसके अनुसार खजूर की फसल गोमय की खाद पाउडर के रूप में डालने से खजूर का उत्पादन बहुत अधिक होता है। विशेषज्ञ यह भी कहते हैं कि भारतीय देसी गाय के गोमय में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, जिंक और आयरन जैसे पोषक तत्व होते हैं और ये सारी चीजें खजूर के लिए अत्यावश्यक हैं, यही कारण है कि खजूर का उत्पादन करने वाले देशों में गोमय की मांग बढ़ गई है।

उल्लेखनीय है कि विश्व में सबसे अधिक 'गाय' भारत में हैं, इस कारण भारत दूध और गोमय का सबसे बड़ा उत्पादक है। नीति आयोग के अनुसार भारतीय मवेशी प्रतिदिन लगभग तीन मिलियन मीट्रिक टन गोमय का उत्पादन करते हैं, भारत में सबसे अधिक गोमय का उत्पादन राजस्थान में होता है, इसके बाद महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश हैं। राजस्थान में २०२३-२४ में १०,१९० करोड़ रुपए कीमत का 'गोमय' उत्पादन हुआ था।

गोमय निर्यात करने वाली कंपनियां

भारत से 'गोमय' निर्यात करने में कई कंपनियां लगी हैं, इनमें बाबा इंटीग्रेटेड टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, एजिनक्स बिजनेस वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड, थिवा एक्सिम, केई एक्सपोर्ट्स और मातृछाया ओवरसीज प्रमुख हैं।

५-१० नवंबर तक होगा गोधन सम्मेलन

नई दिल्ली स्थित ध्यान चंद स्टेडियम में ५-१० नवंबर तक गोधन सम्मेलन हुआ, इसे गोपालकों और गोशालाओं का सबसे बड़ा समागम माना गया। इसमें हजारों लोंगों ने भाग लिया। सम्मेलन में देशभर की गोशालाएं अपने उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई।

विश्व की सबसे बड़ी गौशाला

देशभर में २२,००० से अधिक गौशालाएं हैं, इनसे लाखों लोगों को रोजगार मिल रहा है। राजस्थान के सांचौर जिले के 'पथमेड़ा' गांव में एक बड़ी गौशाला है, यहां लगभग १,५०,००० गोवंशों की देखरेख होती है, इस कारण यह विश्व की सबसे बड़ी गौशाला मानी जाती है, यहां सैकड़ों लोग काम करते हैं, गौशाला में दूध और गोमय से कई प्रकार की वस्तुएं बनाई जाती हैं, यहां का घी अत्यन्त प्रसिद्ध है, ऐसे ही गोमूत्र से भी यहां अनेक प्रकार के उत्पाद तैयार होते हैं, इन सबका बाजार में अच्छी मांग है।

गोमय की मांग बढ़ने के पीछे अन्य अनेक कारण हैं:

इनमें पहला है, जैविक खेती की बढ़ती मांगः बतादें कि विश्वस्तर पर जैविक और टिकाऊ कृषि की ओर रुझान बढ़ रहा है, 'गोमय' एक प्राकृतिक उर्वरक है, जो मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है, सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करता है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करता है। संयुक्त अरब अमीरात, मालदीव और अमेरिका जैसे देश खजूर के बागानों और अन्य जैविक फसलों के लिए गोमय का उपयोग कर रहे हैं।

दूसरा कारण है पर्यावरण-अनुकूल विकल्पः 'गोमय' पर्यावरण-अनुकूल और प्राकृतिक रूप से विघटित होने योग्य है, जो इसे रासायनिक उर्वरकों का एक टिकाऊ विकल्प बनाता है, यह मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद करता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के वैश्विक लक्ष्यों में योगदान मिलता है।

तीसरा कारण है सांस्कृतिक और धार्मिक उपयोगः सूखे 'गोमय' के केक, जिन्हें भारत में धार्मिक अनुष्ठानों और हवन के लिए उपयोग किया जाता है, विदेशों में बसे भारतीय समुदायों में भी लोकप्रिय हैं। सिंगापुर, अमेरिका और मालदीव में रहने वाले भारतीय मूल के लोग इनका उपयोग धार्मिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए करते हैं।

चौथा कारण है-विविध उपयोगः 'गोमय' का उपयोग केवल उर्वरक तक सीमित नहीं है, इसका उपयोग जैविक कीटनाशकों, बायोगैस उत्पादन और पारंपरिक चिकित्सा में भी होता है, इसके अलावा गोबर से बने उत्पाद जैसे अगरबत्ती आदि (एचएस कोड ३३०७४१००) भी निर्यात किए जाते हैं, जिससे इसकी मांग बढ़ती है।

पांचवां है वैश्विक बाजार में भारत की मजबूत स्थितिः भारत के 'गोमय' उत्पादों की गुणवत्ता और कम लागत ने इसे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाया है। २०२३-२४ में १,१३३ खेपों के साथ भारत दुनिया का सबसे बड़ा गोमय निर्यातक बन गया।

छठा है स्वास्थ्य और पर्यावरण जागरूकताः विश्व स्तर पर उपभोक्ता और किसान रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभावों से अवगत हो रहे हैं, 'गोमय' एक प्राकृतिक, गैर-विषाक्त विकल्प है, जो मिट्टी और फसलों के लिए सुरक्षित है, जिससे इसकी मांग बढ़ रही है। विशेषज्ञ मान रहे हैं कि भारतीय 'गोमय' की मांग ऐसे ही बढ़ती रही, तो आने वाले कुछ ही समय में इस क्षेत्र में लाखों लोगों को रोजगार मिल सकता है, इससे गो पालन का चलन बढ़ेगा और सबसे अधिक लाभ गांवों के लोगों को ही मिलेगा।

-विजय खुराणा, नई दिल्ली
भ्रमणध्वनिः ९३१२२०९४९३

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

योग से होता है शारीरिक और मानसिक विकास

आदिकाल से ही योग का महत्व सर्वविदित है। वेदों और उपनिषदों में भी योग और ध्यान की विस्तृत व्याख्या की गई है। भारत में प्राचीनकाल में गुरूकुल में वैदिक शिक्षा दी जाती रही है। योग और ध्यान इस शिक्षा के अंग रहे हैं। मनुष्य योनि में ईश्वर का दिया हुआ एक वरदान है- योग। जो व्यक्ति योग, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यस्त होता है, उसका संपूर्ण शारीरिक और मानसिक विकास हो जाता है। योग के विभिन्न अंगों का अभ्यास करते-करते मनुष्य एक दिन आत्म-साक्षात्कार का भी पात्र बन जाता है।

योग का संबंध केवल व्यायाम तक सीमित नहीं है यह हमें आचरण और व्यवहार में बदलाव भी सिखाता है। योग के अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। योग के इन अंगों का पालन करने हेतु योग्य शिक्षक का मार्गदर्शन लेना चाहिए।

सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि हमें योग क्यों करना चाहिए?

कुछ लोग व्यायाम के लिए योग करते हैं और कुछ लोग मानसिक शांति के लिए। व्यायाम के लिए हम शीर्षासन, सर्वांगासन हल्लासन, भुजंगासन तथा सुप्त वज्रासन कर सकते हैं।

मानसिक शांति के लिए आसन है सिद्धासन, स्वस्तिकासन, समासन और पद्मासन। योग के इन आसनों के विषय में कई लोगों को भ्रम होता है, जैसे कि यह आसन उनके लिए उचित है या नहीं? हमें कौन से आसन करना चाहिए और कौन से नहीं, इस बारे में उत्तर है कि व्यक्ति पहले अपने उद्देश्य का स्मरण करे, पहले उसे यह विचार करना होगा कि योग के द्वारा वह किस पड़ाव या स्थिति तक पहुंचना चाहता है। योग के आसन मुख्य रूप से ३ तरह से व्यक्ति को लाभ पहुंचाते हैं, पहला शारीरिक, दूसरा मानसिक और तीसरा है, आध्यात्मिक। व्यक्ति को योग से लाभ कई बातों पर निर्भर करता है, पहले उसे यह देखना होगा कि उसका भोजन आहार कैसा है, उसकी दिनचर्या कैसी है, उसका एकांकी जीवन है या वह गृहस्थ है। आयु और पारिवारिक दायित्व पर भी विचार करना चाहिए। योग के लिए यह आवश्यक है कि वह सात्विक हो। शाकाहारी हो उसका भोजन अल्प और संतुलित होना चाहिए, उसकी सोच सकारात्मक हो। विचारों में पवित्रता हो। योग अभ्यास के लिए शांत स्थान होना चाहिए सबसे अच्छा है एकांत। स्थान ऊंचा हो, वातावरण शुद्ध हो। किसी नदी का तट सबसे उपयुक्त होता है, गृहस्थ के लिए घर में ही किसी कमरे का चयन करना चाहिए, कमरा शांत और हवादार हो, योग के आसन सुबह और शाम को किए जा सकते हैं।

योग से जुड़कर मनुष्य के विचारों में रूपांतरण होने लगता है, मन में सत्य, अहिंसा, करूणा, दया और समानता जैसे गुणों का उद्भव होता है। यह सच है कि दुनिया में आनंद और खुशी से बढ़कर कोई भी चीज अनमोल नहीं है और योग से ये दोनों हमें सहज रूप से मिल जाते हैं। आप अनुभव करेंगे कि योग का साधक सदैव एक अलग तरह के आनंद में डूबा रहता है, इस तरह की प्रसन्नता ही साधक की सबसे बड़ी जीवन की सफलता है।

योग के दौरान उसके आचरण में बदलाव आता है। बचपन में मिले संस्कार ही उसका आचरण कर्म बन जाते हैं। उसकी चाहत सदैव धर्म मार्ग पर चलने की हो जाती है। धर्म का अर्थ है-धारण करना। मनुष्य के अत:करण में सदाचरण, सद्विचार और नीति मार्ग पर चलने की प्रेरणा होना ही धर्म है। धर्म का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उसे पूजा और उपासना तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता है। योग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे हमारे शरीर में स्थित नाड़ियों का शोधन हो जाता है। नाड़ियों के शोधन ने स्नायु तंत्र मजबूत होता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। फेकड़ों और शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। शरीर में यह नाड़ियां मूलाधार से शुरू होकर मेरूदंड के अंदर मस्तिष्क तक जाती हैं। इडा, पिंगला और सुषुम्ना तीन प्रमुख नाड़िया बताई गई हैं। कुंडलिनी जागरण के लिए इन तीनों का संतुलन आवश्यक होता है। सिद्ध योगीजन योग के तप से शरीर में स्थित सातों चक्रों का भेदन कर लेते हैं। ऐसे साधक की दृष्टि आंतरिक हो जाती है और एक दिन उसे आत्म-साक्षात्कार भी हो जाता है। वास्तव में योग एक दिव्य अनुभूति है, जिस साधक ही अनुभव कर सकता है।

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

२०२६
शुभ का म ना

ASHOK B AGRAWAL
9324303625

ESHAAN AGARWAL
8369920227

1604, C Wing, Raj Tattva Lodha Stella, Kapurbawdi, Ghodbunder Road,
Thane (W), Maharashtra, Bharat- 400607

गौमाता का सन्मान और संर्वधन हि विकास का मुलमंत्र है !
जो उसका अनादर करेगा वो विकास का बाधक है!

Purushottam Daga
भ्रमणध्वनि - 09822201040

Siddharth Daga
भ्रमणध्वनि - 8446600957

MANIKJI METACHEM PVT. LTD
An ISO 9001-2015 Certified Company
• Manufacturer of COVER FLUXES, DEGASSER & GRAIN REFINER FOR Aluminimum Melters.
• Manufacturer & Exporter of Ferrous Foundry Fluxes for Steel Industries

Shreeram Nagar, Sirso, Murtizapur, Dist- Akola, Maharashtra, Bharat - 444107
अणुडाक : pmdaga@manikjimetachem.co.in

राजस्थान में मौजूद ओसियां का सन टेम्पल

जोधपुर से लगभग पच्चास मिल की दूरी पर मौजूद है, राजस्थान का सबसे प्राचीनतम और एक अद्भुत मंदिर जिसका नाम है 'ओसियां का सन टेम्पल' इसे कई लोग सन टेम्पल ऑफ़ ओसियां के नाम से भी जानते हैं।

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष

२०२६
शुभकामना

GOVIND PRASAD BANG
9440048251, 9030048251

HARI KISHAN BANG
9849024208

SHRI BALLABH NATHMAL BANG
WHOLESALE GRAIN KHANDASARI & SUGAR MERCHANTS

NIKHIL KUMAR BANG
DIRECTOR
9866955300 / 9848055300

HARIKISHAN & CO

7-2-902, Hissam Gunj, Secunderabad, Bharat - 500 003
Off.1-1-58/1 to 58/11, Srinath Commercial Complex,
S.D Road Secunderabad-500003 | Email: Sales@hksugar.com

सन टेम्पल का इतिहास

'ओसियां' में मौजूद सन टेंपल का निर्माण कब हुआ था, इसका कोई प्रमाणिक तथ्य किसी के पास नहीं है, लेकिन कुछ अध्ययनों के बाद ये कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण ९वीं शताब्दी से लेकर १२वीं शताब्दी के बीच किया गया था, कुछ पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रतिहार वंश के एक राजपूत राजकुमार उपल्देव ने इस नगर की स्थापना की थी। (कोणार्क सूर्य मंदिर) हालांकि, कुछ वर्षों बाद इस मंदिर के कई हिस्से खंडहर में तब्दील भी हो गए, लेकिन पुरातात्विक विभाग ने इसे संरक्षित करके अपने अंदर ले लिया और आज ये जगह एक पर्यटन स्थल के रूप से प्रसिद्ध है।

मंदिर की वास्तुकला

सूर्य मंदिर की वास्तुकला के बारे में कई विचार हैं, प्राचीन काल में निर्मित इस मंदिर के कुछ हिस्से महामारू शैली, तो कुछ हिस्से गुप्तकालीन कला और स्थापत्य का नमूना दिखाई देता है। लाल बलुआ पत्थर की नक्काशीदार बनावट इस मंदिर को और भी अधिक आकर्षक बनाती है, जानकारी के लिए बता दें कि इस मंदिर की नक्काशी कोणार्क में मौजूद सूर्य मंदिर से भी की जाती है। (मोढेरा सूर्य मंदिर) कई जगह ये उल्लेख है कि यहां लगभग सौ से भी अधिक मंदिरों का घर हुआ करता था, लेकिन तुर्क और अफगान आक्रमणों के दौरान कई मंदिर नष्ट हो गए।

विष्णु के साथ अन्य देवताओं की मूर्ति

इस मंदिर परिसर में सूर्य देव की मूर्ति होने के साथ-साथ कई हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां भी मौजूद हैं। परिसर में भगवान शिव, विष्णु, नवग्रह, सूर्य, ब्रह्मा, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर, दिक्पाल, श्रीकृष्ण, पिप्पलाद आदि के साथ कई देवी और देवताओं की मूर्ति परिसर में मौजूद हैं। जोधपुर के ओसियां गांव में मौजूद ये मंदिर अन्य राज्यों में मौजूद सबसे प्राचीन सूर्य मंदिरों में से एक माना जाता है, हालांकि मौजूदा समय में मंदिरों और मूर्तियों की संख्या बहुत कम हो गई है, कई देवताओं के चित्र भी चोरी हो गए हैं।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

अटल जयंती पर 'मैं भारत हूँ' फाउंडेशन ने आयोजित की संगोष्ठी

रायपुर: दिनांक २५ दिसंबर को 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के जन्म दिवस पर अवंति विहार, अटल चौक में 'आधुनिक भारत के स्वप्न द्रष्टा 'भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई. जिसमें कवियों, साहित्यकारों ने अटल जी के गौरवगान में समाँ बांध दिया। कार्यक्रम संयोजक कैलाश रारा ने जहां अटल जी को सुशासन का नायक बताया, वहीं प्रमुख सलाहकार राजकुमार राठी ने अटल जी को राजनीतिक जीवन में शुचिता की पराकाष्ठा बतलाया। मुख्य वक्ता एवं वरिष्ठ पत्रकार गिरीश पंकज ने अटल जी को हिंदी का पुरोधा एवं आदर्शवाद का नायक बतलाया। प्रेस काउंसिल आफ इंडिया के पूर्व सदस्य प्रदीप जैन ने अपने संबोधन में कहा कि अटल जी के हृदय में जहां एक और कवि मन की कोमलता थी तो दूसरी ओर पोकरण विस्फोट जैसे दृढ़ संकल्प का साहस भी था। इतिहासविद रमेंद्र नाथ मिश्र ने अपने को अटल जी के द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य की सौगात की घोषणा का प्रत्यक्षदर्शी गवाह बतलाया। कवियित्री पूजा अग्रवाल ने अटल जी को स्वर्णिम कॉरिडोर का निर्माता एवं आधुनिक भारत का शिल्पी बतलाया। जनमन के संपादक डॉक्टर अनिल द्विवेदी ने अटल जी के सादगी एवं संघर्षपूर्ण जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। भाजपा नेता अशोक बजाज ने अटल जी के साथ बिताए क्षणों को याद किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्षा वणिका शर्मा ने अटल जी को अपना आदर्श बतलाया।

विशिष्ट अतिथियों के द्वारा अटल जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर प्रारंभ की गई इस संगोष्ठी में कवि राजेश जैन 'राही' एवं छबिलाल सोनी की काव्य रचनाओं ने दर्शकों की खूब तालियां बटोरी कार्यक्रम में विशेष रूप से पार्षद प्रभा विश्वकर्मा, कमल जैन, किशोर नायक, रितु वर्मा, सुब्रत घोष, सुजीत परिहार, प्रकाश चोपड़ा, अनुराग जैन, गायत्री परिवार के संरक्षक दिलीप पाणिग्रही एवं चेंबर ऑफ कॉमर्स के सलाहकार अरविंद जैन आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का सफल संचालन ममता जैन के द्वारा किया गया।

-कैलाश रारा
कार्यक्रम संयोजक

2026 शुभकामना

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में,
लेकर खुशियाँ विशेष

Harshad A. Kela
Rama Kela
Mob.: 98198 32445

- Trishul Investment And Finance Co.
- Nickle And Greenback Trades Pvt. Ltd.

Khamgaon: Kela House,
Kela Road, Kela Nagar,
Khamgaon, Bharat - 444 303

Mumbai: Office No. 4&5, 1st Floor, Giri Niwas, 22, Adi Marzaban Path, Ballard Estate, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 001
Email: harshadkela@gmail.com

Mumbai: 101, Rushabh Apts, 10th Floor, Dr. Parekh Street, Prarthna Samaj, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 004

नूतन वर्ष में सब घुल-मिल जाए
हर जीवन में खुशियाँ लाए
वर्ष २०२६ सुख पूर्वक व स्वास्थ पूर्वक हो

Prakash Bagri
2026 2026
LIVEDARSHAN
WEB BASED VIDEO SURVEILLANCE AND BROADCASTING SOLUTIONS

Onlooker Bldg., 6th Floor, Off.: #41,
P.M. Road, Fort, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400001
Ph.: 91-66359179 Tel: 022 - 40024901
Mob. 09323034901
E-mail: prakashbagri@livedarshan.com
Website: livedarshan.com

देश के महर्षि दधीचि तपस्या स्थलों की खोज

इंदौर: लगभग १३ वर्ष पूर्व महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट ने पहली बार नैमिषारण्य में महर्षि दधीचि जन्मोउत्सव मनाना आरंभ किया गया था, जो आज तक अनवरत रूप से चल रहा है। महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष शंकर लाल शर्मा का 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को कहना है कि इसके पूर्व इंदौर के समीप धार जिले के 'धरमपुरी' में माँ नर्मदा के बीच में बेंट टापू पर बिल्वामृतेश्वर नाम के तीर्थ पर भी महर्षि दधीचि तपस्थली ज्ञात हुई थी, अब वहां पर भी प्रतिवर्ष महर्षि दधीचि जन्मोउत्सव पर्व और महर्षि दधीचि देहोत्सर्ग पर्व मनाया जाने लगा है। शर्मा जी का मानना है कि महर्षि दधीचि ने देश के विभिन्न क्षेत्र में तप किया, जिससे देश के विभिन्न क्षेत्रों में आज भी महर्षि दधीचि के स्थान हैं, हालांकि उनके बारे में दाधीच बंधुओं को ज्यादा जानकारी नहीं है। महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट का उद्देश्य महर्षि दधीचि की ऐसी ही तपोभूमि को खोजने और उसके बारे में दाधीच बंधुओं को जानकारी प्रदान करना है, इसी तारतम्य में महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष शंकर लाल शर्मा इंदौर के नेतृत्व में सतीश दाधीच नसीराबाद, महावीर दाधीच जोधपुर दिनांक ०६/१२/२०२५ को बिहार राज्य के 'छपरा' जिला में महर्षि दधीचि आश्रम पहुंचे। आश्रम के मुख्य द्वार पर महर्षि दधीचि उमानाथ मंदिर लिखा मिला, उससे मन में संतोष और खुशी मिली की यही महर्षि दधीचि का आश्रम है, जानकारी में आया कि दधीचि आश्रम के कारण ही गाँव का नाम 'दहियावा' रखा गया था।

यह आश्रम सरयू नदी के तट पर स्थित है, अंदर जाने पर मंदिर कमेटी के सदस्य एवं संत पुजारी निवास पर संपर्क किया और जानकारी हासिल करते हुए मंदिर के दर्शन लाभ लिए, मंदिर में महादेव मंदिर एवं हनुमान मंदिर की स्थिति अच्छी है लेकिन महर्षि दधीचि मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, यहां महर्षि दधीचि की प्रतिमा सीमेंट से बनी हुई है। मन व्यथित हुआ लेकिन टीम के सदस्यों को मन में प्रेरणा जागी कि मंदिर की रंगाई पुताई एवं मंदिर में संगमरमर की मूर्ति लगाई जाए, साथ ही विचार किया कि इसके पावन कार्य के लिए सम्पूर्ण दाधीच समाज का सहयोग लेना चाहिए।

दधीचि आश्रम ब्राह्मण टोली 'छपरा' बिहार के श्रीनिवास जी तिवारी द्वारा जानकारी मिली की इस मोहल्ले में ७- ८ तिवारी परिवार और १०० मुसलमान परिवार रहते हैं, इस मोहल्ले का नाम भी 'दधीचि आश्रम ब्राह्मण टोली' के नाम से जाना जाता है। सेवारत श्रीनिवास जी तिवारी परिवार द्वारा आज तक दधीचि आश्रम का ध्यान रखते हुए बाउंड्रीवाल एवं मंदिर की स्थिति को अच्छा रखा है, इसके लिए दाधीच समाज उनका आभारी है।

हनुमान जी का ननिहाल

'छपरा' में ही कुछ दूरी पर सरयू नदी किनारे गौतम ऋषि के आश्रम के भी दर्शन लाभ लिए, यहाँ माता अंजनी का पीहर है। पवनपुत्र हनुमान जी के नानाजी-नानीजी, मामाजी सदानंद व माता अंजनि के एक ही मंदिर में दर्शन किये और महसूस किया कि हनुमान जी के ननिहाल में महर्षि दधीचि कि कृपा से ही आना हुआ।

गजेंद्र मोक्ष तीर्थ के दर्शन: इतना ही नहीं दधीचि कि ऐसी कृपा रही कि दूसरे दिन भगवान् दधीचि दर्शन के लिए सुबह जाने पर एक गजेंद्र मोक्ष तीर्थ, हरिहर महादेव के स्थान की जानकारी मिली, जो मात्र ५० किलोमीटर की दूरी पर गंडक- गंगा नदी के संगम तट पर स्थित है।

सोनपुर का प्रसिद्ध मेला: एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला देखने का भी सौभाग्य मिला, यह स्थान बिहार की राजधानी पटना के ठीक उत्तर में गंगा पार है। श्री शंकरलाल शर्मा ने 'मेरा राजस्थान' को बताया कि 'महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट' ने नैमिषारण्य में परमपूज्य राष्ट्रसंत गोविंददेवगिरिजी के पावन सानिध्य में १०८ श्रीमद भागवत का पुण्यलाभ लिया था, इस अवसर पर मनोज दाधीच द्वारा सम्पादित पुस्तक अथर्वानन्दन महर्षि दधीचि में देश के विभिन्न स्थानों पर महर्षि दधीचि तपस्थली का वर्णन किया गया है।

-सतीश दाधीच, नसीराबाद, अजमेर, राजस्थान, भारत!
भ्रमणध्वनि: ९००१४५०८१३

डालमिया लायंस उत्सव में विद्यार्थियों द्वारा प्रभावशाली प्रदर्शन

मुंबई: प्रहलादराय डालमिया लायंस कॉलेज का डालमिया लायंस उत्सव इस वर्ष युवा उत्साह, रचनात्मकता और प्रतिस्पर्धात्मक भावना का सशक्त प्रतीक बनकर उभरा। कॉलेज परिसर में आयोजित ३४वें संस्करण में कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच के माध्यम से विद्यार्थियो ने अपनी बहुआयामी प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन किया, इस अवसर पर शारदादेवी-श्यामसुंदर रूईया ट्रॉफी का अनावरण किया गया। ट्रस्टी कन्हैयालाल सराफ के मार्गदर्शन में आयोजित इस अंतर महाविद्यालयीन सांस्कृतिक महाकुंभ में २७ विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, इसमें मुंबई और उपनगरों के ५४ कॉलेजों के करीब २७०० स्टूडेंट्स शामिल हुए, उत्सव का आयोजन लायन विकास सराफ और अमित गुप्ता के सान्निध्य में हुआ। प्रमुख अतिथि के रूप में फिल्म संवाद लेखक एवं गीतकार संजय मासूम श्रीवास्तव, झुम्मा मित्रा, प्रिंसिपल डॉ. दिगंबर गंजेवार, उत्सव संयोजक डॉ. सचिन बंसोडे, दीपिका शुक्ला, डॉ. सुनीता पाल, डॉ. पूनम बियानी, हिरल जैन सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

मेड़ता तहसील महेश्वरी परिषद ने मनाया वार्षिकोत्सव

मुंबईः मेड़ता तहसील महेश्वरी परिषद का वार्षिकोत्सव माहेश्वरी भवन अंधेरी पश्चिम में आयोजित हुआ, समारोह में डॉ. बीआर. जाजू ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला, मुख्य अतिथि रमेश चांडक ने कहा कि हम मोबाइल के गुलाम हो गए हैं, दिन में पंद्रह मिनट बिना मोबाइल के पूरे परिवार के साथ बैठने की आदत शुरू करनी चाहिए। हास्य कवि सुरेश मिश्र के संचालन में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें लाफ्टर चैंपियन फेम सुनील सावरा, राना तबस्सुम, डाक्टर राज बुंदेली ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आयोजन समिति के लालचंद दरक, ब्रिजमोहन फोफालिया, राधेश्याम दलिया आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाया। बीआर जाजू ने आभार व्यक्त किया।

'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठक का सम्मान

दिल्लीः डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विचार मंच एक ऐसा मंच है जो डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राष्ट्रवादी विचारों और आदर्शों को बढ़ावा देता है, भारत की एकता और अखंडता के लिए काम करता है तथा उनके राष्ट्रवाद के सिद्धांतों (जैसे एक राष्ट्र, एक विधान, एक निशान) पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों और पहलों का आयोजन करता है, जिसमें युवाओं को जोड़ना और राष्ट्रीय विकास में योगदान देना शामिल है। जिसमें प्रतिवर्ष ६० प्रतिष्ठित हस्तियों को सम्मानित किया जाता है इनमें मुख्यमंत्री संतवाद्यात्मिक गुरु उद्योगपतियों लेखकों को पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को शामिल किया जाता है, इस वर्ष मंच द्वारा हिंदू रत्न सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है, जिसमें 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठक शीतल कुमार अग्रवाल जी को भी सम्मानित किया गया, यह भव्य आयोजन रस शताब्दी समारोह का हिस्सा है, 'भारत' की समृद्धि विधिक शान और भविष्य को संचालित करने वाली सामूहिक भावना की याद दिलाता है।

स्वागतम २०२६

स्वागतम-स्वागतम-स्वागतम
नववर्ष का स्वागत करता पूरा भारत
२१ वीं सदी का भारत, निर्णय लेता अद्भुत
पूर्ण विश्व में परचम, अपना जो है लहराया
विश्व गुरु है बनकर, भारत महान बनाया
गर्व हमें है उन पर, जो निर्णायक शक्ति बन कर
बड़े लक्ष्य तय करता और आगे बढता रहता
गर्मजोशी से स्वागत हर देश 'भारत' का करता
विकास प्रगति परिवर्तन और अर्थव्यवस्था
सर्वोत्तम बन कर आई
और तय सीमा के अन्दर, अपने लक्ष्यों को पूरा करता
ना झुका है भारत, ना झुकेगा भारत
ये राजनीति का खेला, सोच समझकर झेला
जो करते हैं किंतु परंतु, अब समझ गये वो बंधु
और देशवासियों देश प्रेमियों, अपना ये अद्भुत भारत
नए साल में नई सोच से, जन-जन का कल्याण करेगा
मानवता के लिए दीप स्तंभ है 'भारत' देश महान!

रामगोपाल मून्धड़ा, बैंगलोर
९३४१८३३३५३

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
२०२६
शुभ का म ना
Ashok Kumar Asera
Mob. 9444022297
Shri Asera Bijhani & Company
54, Godown Street, Chennai, Tamilnadu-600001
Ph.: 044-25382409
E-mail : ashokaseras@yahoo.co.in

नूतन वर्ष में सब घुल-मिल जाए हर जीवन में खुशियाँ लाए वर्ष २०२६ सुख पूर्वक व स्वास्थ पूर्वक हो
2026
शुभ का म ना
Sital Kumar Agarwal

CHAIRMAN : Agroha Vikas Sansthan, Agroha.
PRESIDENT : Agarwal Seva Samaj, Mumbai.
PATRON TRUSTEE : Agroha Vikas Trust, Agroha.
PAST PRESIDENT : Bombay Metal Exchangle Ltd.
Bombay Non-Ferrous Metal Merchants Assan. Ltd.
FOUNDER TRUSTEE : Maharaja Agrasen Medical College, Agroha
TRUSTEE : Tilakraj Hemraj Agarwal Charitable Trust
Bombay Metal Exchange Charitable Trust
Akhil Bharatiya Agarwal Sammelan, Delhi
Sri Agrasen Foundation (Agar Vibhuti Samarak) Agroha.
NATIONAL VICE PRESIDENT : All India Vaish Federation, New-Delhi
Agarwal Metal Company
9821036450 website: www.agrohasheelamatamandir.com

धनुर्मास, मलमास, खरमास, २०८२ गुरूवार १६ दिसम्बर से १३ जनवरी २०२६ तक

इस वर्ष १६ दिसंबर, २०२५ से लेकर १३ जनवरी, २०२६ तक खरमास लग रहा है।

चातुर्मास की तरह 'खरमास' में भी कोई मांगलिक यानी शुभ कार्य नहीं किया जाता है। विवाह, मुंडन और गृह प्रवेश आदि शुभ कार्य नहीं कर सकते हैं। खरमास समाप्त होने के बाद मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं।

क्यों 'खरमास' में कोई शुभ कार्य नहीं किए जाते?

'खरमास' के दिनों में सूर्य देव धनु और मीन राशि में प्रवेश करते हैं, इसके चलते बृहस्पति ग्रह का प्रभाव कम हो जाता है, वहीं गुरु ग्रह को शुभ कार्यों का कारक माना जाता है, लड़कियों की शादी के कारक गुरु माने जाते हैं। गुरु कमजोर रहने से शादी में देर होती है, साथ ही रोजगार और कारोबार में भी बाधा आती है, इसके चलते 'खरमास' के दिनों में कोई शुभ कार्य नहीं किए जाते, विवाह के लिए शुक्र और गुरु दोनों का उदय होना आवश्यक है, यदि दोनों में से एक भी अस्त होगा तो मांगलिक कार्य वर्जित होते हैं।

धनुर्मास महत्व कथा व्रत पूजा विधि

धनुर्मास महत्व कथा व्रत पूजा विधि भारत के दक्षिण भाग में यह तीस दिवसीय त्यौहार विस्तार से मनाया जाता हैं। धनुर्मास तीस दिनों का त्यौहार होता है, जिसमें खासतौर पर भगवान विष्णु की उपासना की जाती हैं, यह त्यौहार खासतौर पर दक्षिण भारत में मनाया जाता हैं, भक्ति के भाव को जगाने के लिए इस महीने में धार्मिक कर्मों के अलावा अन्य कार्यों जैसे शादी मुंडन आदि को करना निषेध माना जाता है, जिससे मनुष्य का मन विचलित न हो और वो पुरे मन से ईश्वर उपासना करे, इस प्रकार पुराणों के अनुसार इन दिनों शादी की कोई उपयुक्त तिथी नहीं निकलती। भगवान वैकुंठनाथ की पूजा का महत्व होता है, इसलिए इन दिनों में आने वाली एकादशी को वैकुण्ठ एकादशी कहा जाता है, इस दिन का धनुर्मास ने सर्वाधिक महत्व होता है।

कब मनाया जाता है धनुर्मास

धनुर्मास तीस दिनों का त्यौहार है, जो कि मध्य मार्गशीर्ष से शुरू होकर मध्य पौष में खत्म होता हैं, इस प्रकार यह १६ दिसम्बर से शुरू होकर १४ जनवरी को खत्म होगा, यह मास मकर संक्रांति पर खत्म होता हैं, जब सूर्य धनु राशी में प्रवेश करता हैं, तब धनुर्मास का प्रारंभ होता है, जिसे धनु संक्रांति कहते हैं, जब सूर्य कर्क रेखा से उत्तर की तरफ बढ़ता हैं और मकर राशी में प्रवेश करता हैं तब उत्तरायण होता है और इसके विपरीत दक्षियायण होता हैं, अर्थात धनुर्मास उत्तरायण के समय होता है।

धनुर्मास को धनुमास, चाप मास, कोदंडा मास, कार्मुका मास भी कहा जाता है, धनु का अर्थ धनुष से होता हैं, अतः इसे शून्य मास भी कहा जाता हैं।

धनुर्मास धनु मास पूजा विधि एवम महत्व

➪ इन दिनों भगवान विष्णु की उपासना का महत्व होता हैं।
➪ इन दिनों अन्य उत्सव जैसे शादी, मुंडन आदि करना निषेध माना जाता है।
➪ इन दिनों सूर्योदय से पहले उठकर स्नान किया जाता है और सूर्य उदय के आधे घंटे पहले पूजा की जाती है, इसे ब्रह्ममुहूर्त में होने वाली पूजा कहा जाता है।
➪ इन दिनों विष्णु जी भगवान के श्लोकों का उच्चारण किया जाता हैं।
➪ इन दिनों गरीबों एवम ब्राह्मणों को दान दिया जाता हैं।
➪ इन दिनों विष्णु जी की उपासना हजार वर्षों की उपासना के समान मानी जाती है।
➪ इस पुरे मास वेंकटेश स्त्रोत का पाठ किया जाता है।
➪ मंदिरों में वेंकट आरती की जाती है।

धनुर्मास उत्सव की धूम पुरे तीस दिन तक रहती है, यह दक्षिणी भारत का विशेष पर्व हैं इसके नियम व महत्त्व चौमासा या चातुर्मास व्रत के समान ही होते हैं।

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
2026 शुभ कामना
MADAN BAGRI
Mob: 9962534367
DFA
Devika Ferro Alloys
An ISO 9001 2015 Company
Stockists of: Silico Manganese, Ferro Silcon, Ferro Manganese and Ferro Chrome
70/1, Sembudoss Street, 3rd Floor, Room No. - A-16, Broadway, Chennai, Bharat- 600001
Email: devikaferroalloys@gmail.com
Head Office: Kolkata. Branches: * Chennai *Coimbatore * Kolhapur

नव वर्ष की पावन बेला में, है यही शुभ सन्देश,
हर दिन आये आपके जीवन में, लेकर खुशियाँ विशेष
2026 शुभ कामना
KANTA DEVI J.NARAYANDAS RATHI
Mob: 9884231305 / 9841388454
SHREE KUTUMB - NARAYAN NIWAS
New No. 97, Old No.40 Medavakkam Tank Rood.Kilpauk, Chennai, Tamil Nadu, Bharat- 600010
Email: madanmohan_rathi@yahoo.co.in

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पधारो म्हारे देश
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा राजस्थान
सम्पादक : बिजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ
मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना
राजस्थान की राजधानी जयपुर
सम्पादक
बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनिः ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
भारत का एक राज्य राजस्थान का एक नगर
1 प्रति ₹ 100/-
सांडवा
1 प्रति ₹ 100/-
के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999
विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त
वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2025-2027
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2025-27
License to post without prepayment’
Published on 28/12/2025 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-4015 8094
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in